सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" हर शख्स जिसे आप जानते हैं उसके अंदर भी एक शख्स है जिसे आप नहीं जानते ...!!

अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–297 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, बुधवार 18 नवंबर 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

जहां एक वोट से तय हुई थी जीत, वहां एसआईआर के बाद 1417 मतदाता के नाम कट गए, शहर के 70 वार्डों में करीब 53 वार्डों का ऐसा ही हाल

2021 में हुई निगम चुनाव और एसआईआर के बाद प्रकाशित प्रारंभिक मतदाता सूची से कई चौंकाने वाले खुलासे

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर निगम भिलाई का चुनाव होने वाला है। नगर निगम चुनाव से पहले मतदाता सूची के आंकड़े चौंकाने वाले हैं। 2021 की निकाय चुनाव वाली मतदाता सूची और एसआईआर के बाद 23 अक्टूबर 2026 की प्रारंभिक सूची की तुलना करें तो भिलाई के 70 वार्डों में 69,540 मतदाता कम हो गए हैं। पांच साल पहले निगम में 4 लाख 7 हजार 624 मतदाता थे, अब इनकी संख्या 3 लाख 38 हजार 84 रह गई है। यानी कुल मतदाताओं में करीब 17 फीसदी की कमी आई है।

वार्डवार आंकड़ों पर गौर करें तो 62 वार्डों में मतदाता घटे हैं, जबकि सिर्फ 8 वार्डों में मतदाताओं की संख्या बढ़ी है। यह बदलाव आगामी निकाय चुनाव के लिहाज से महत्वपूर्ण है। 2021 के चुनाव परिणाम से मिलान करने पर पता चलता है कि कई वार्डों में पिछली बार जीत-हार का अंतर बेहद कम था। ऐसे वार्डों में जीत के अंतर से कहीं ज्यादा एसआईआर के बाद मतदाताओं की संख्या घट गई है। जहां एक वोट ज्यादा पाकर पार्षद जीते थे, उस वार्ड में 1417 मतदाता कम हो गए हैं। इस तरह भिलाई निगम के 70 में से 53 वार्ड ऐसे हैं, जहां यही हाल है। इससे अब कई तरह की चर्चाएं हो रही हैं।

केस-1:
एक वोट से जीत, घट गए 1417 मतदाता

वार्ड 56 सेक्टर-2 पश्चिम, यहां पार्षद की जीत-हार का फैसला महज एक वोट से हुआ था। जबकि एसआईआर के बाद वार्ड की मतदाता सूची में 1,417 मतदाताओं के नाम कट गए हैं। 2021 की सूची में यहां 5,311 मतदाता थे, जबकि 23 अक्टूबर 2026 की प्रारंभिक सूची में 3,894 मतदाता दर्ज हैं।

केस-2

सिविक सेंटर सेक्टर-10, यहां पार्षद चुनाव मेंजीत का अंतर 3 वोट था।" तीन वोट अधिक पाकर पार्षद चुनाव जीते थे। लेकिन अब यहां एसआईआर के बाद 835 वोट कम हो गए हैं। 2021 में जब चुनाव हुआ था तब यहां 3,885 मतदाता थे, जो घटने के बाद अब यहां 3,050 मतदाता रह गए हैं।

केस-3

वार्ड 62 सेक्टर-6 मध्य का भी यही हाल है। यहां पिछले चुनाव में जीत का अंतर 16 मतों का था, लेकिन एसआईआर के बाद अब इस वार्ड से 2290 मतदाताओं की संख्या घट गई है। यहां पहले जब चुनाव हुआ था तब 4216 मतदाता थे और एसआईआर के बाद अब 1926 मतदाता बचे हैं।

सबसे ज्यादा वोट से जीते और यहीं सबसे ज्यादा मतदाता बढ़े

पिछले चुनाव में वार्ड 12 रानी अवंती बाई कोहका में कांग्रेस प्रत्याशी ने 2,137 वोटों के अंतर से जीत दर्ज की थी। यह भिलाई निगम के 70 वार्डों में सबसे बड़ा जीत का अंतर था। इस वार्ड में 2021 की मतदाता सूची में 8,135 वोटर थे, जो अब बढ़कर 8,868 हो गए हैं। यानी यहां 733 मतदाता बढ़े हैं। इसी प्रकार वार्ड 22 कुरूद बस्ती में 575, वार्ड 13 कोहका पुरानी बस्ती में 410, वार्ड 40 में 391, वार्ड 3 में 344, वार्ड 1 में 196, वार्ड 46 में 155 और वार्ड 44 में 8 मतदाता बढ़े हैं।

इन 10 वार्डों में सबसे ज्यादा घटे वोटर, पांच में कमी 2 हजार से अधिक

वार्ड 62 में सबसे ज्यादा 2,290 मतदाता कम हुए हैं। यहां 2021 में 4,216 मतदाता थे, अब 1,926 रह गए हैं। वार्ड 45 में 6,091 से घटकर 3,821 मतदाता बचे हैं, यानी 2,270 की कमी आई है। वार्ड 9 में 7,605 से घटकर 5,344 होने पर 2,261, वार्ड 28 में 7,786 से 5,614 होने पर 2,172 और वार्ड 5 में 7,495 से 5,391 होने पर 2,104 मतदाता कम हुए हैं। इनके अलावा वार्ड 63 में 1,890, वार्ड 31 में 1,882, वार्ड 69 में 1,812, वार्ड 67 में 1,804 और वार्ड 49 में 1,697 मतदाताओं की कमी दर्ज की गई है। इन वार्डों में इतनी बड़ी गिरावट के पीछे क्या वजह है, यह निर्वाचन शाखा की जांच का विषय है।

यूपी मिशन 2027 : बीजेपी में कलह सर्वे की चिंता, विपक्ष में सीटों का पेंच



आलोक तिवारी / नईदिल्ली-लखनऊ

2027 के विधानसभा चुनाव में अभी 4 महीने से ज्यादा का वक्त बाकी है, लेकिन यूपी की सियासत अभी से उबाल पर है। सत्तारूढ़ बीजेपी अंदरूनी कलह और खराब सर्वे से जूझ रही है तो विपक्षी सपा-कांग्रेस गठबंधन सीट बंटवारे पर उलझा है।

मथुरा चिंतन और योगी-शाह मुलाकात

बीजेपी की अंदरूनी नाराजगी दूर करने के लिए मथुरा में दो दिवसीय चिंतन बैठक हुई। इसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन, संगठन महामंत्री बीएल संतोष समेत 46 वरिष्ठ नेता शामिल हुए। अयोध्या के बाद मथुरा पर फोकस और जीत की हैट्रिक का नारा दिया गया। इसी बीच 209 उम्मीदवारों की कथित सूची वायरल हुई और पार्टी को खंडन करना पड़ा। वहीं सीएम योगी आगरा दौरा रद्द कर सीधे दिल्ली पहुंचे और गृह मंत्री अमित शाह से मुलाकात की। इसे दिल्ली बनाम लखनऊ की तनातनी से जोड़कर देखा जा रहा है।

सर्वे ने बढ़ाई चिंता, कटेंगे टिकट?

पार्टी के आंतरिक सर्वे और संघ के फीडबैक ने नेतृत्व की चिंता बढ़ा दी है। रिपोर्ट के मुताबिक बीजेपी को पिछले चुनाव के मुकाबले 65 से 75 सीटों का नुकसान हो सकता है। 403 सीटों वाली विधानसभा में बहुमत के लिए 202 सीटें चाहिए, फिलहाल बीजेपी के पास 257 विधायक हैं। इसीलिए इस बार कई मौजूदा विधायकों के टिकट कटने की चर्चा है। 2022 में जुलाई में ही प्रभारी तय हो गए थे, इस बार तैयारियां काफी सुस्त दिख रही हैं।

1.27 करोड़ वोट के दावे पर घमासान

सीएम योगी के रखने के बाद 1.27 करोड़ हिंदू वोट कटने के दावे पर बवाल मचा। मुख्य निर्वाचन अधिकारी नवदीप रेणवा ने साफ किया कि वोटर लिस्ट में धर्म-जाति का कॉलम ही नहीं है, इसलिए ऐसा विश्लेषण संभव नहीं है। अखिलेश यादव ने तंज कसते हुए पूछा, ये आंकड़ा किस दिव्य शक्ति या सैटेलाइट से मिला? उन्होंने पीडीए के वोट काटने की साजिश का आरोप लगाया।

सपा-कांग्रेस में 181 सीटों का पेंच

विपक्ष में भी सब ठीक नहीं है। एक तरफ राहुल गांधी ने सोनिया गांधी की किताब विमोचन में अखिलेश-दिंपल को आगे की पंक्ति में बैठाकर गर्मजोशी दिखाई, दूसरी तरफ कांग्रेस की 181 उम्मीदवारों की संभावित सूची लीक हो गई। आरोप है कि कांग्रेस ने उन 21 सीटों पर भी दावा ठोक दिया है जहां सपा के विधायक हैं। सीट शेयरिंग के लिए को-ऑर्डिनेशन कमेटी तक नहीं बनी है और 15 नवंबर की डेडलाइन निकल गई। हालांकि इमरान मसूद ने कहा है कि शीर्ष नेतृत्व में सकारात्मक बातचीत हुई है और 2-3 दिन में ड्राफ्ट तैयार होगा।

लड़ाई अब 2027 नहीं, 2029 की है

यूपी की लड़ाई अब सिर्फ मुख्यमंत्री की कुर्सी की नहीं है। बीजेपी के लिए ये 2029 के लोकसभा चुनाव का सेमीफाइनल है। अगर यूपी में सीटें घटीं तो दिल्ली की सियासत भी हिलेगी। बीजेपी की सबसे बड़ी चुनौती अंदरूनी गुटबाजी और एंटी-इंकम्बेंसी है। योगी का चेहरा अब भी सबसे बड़ा है, लेकिन संगठन और सरकार के बीच तालमेल की कमी साफ दिख रही है। विपक्ष के लिए चुनौती एकता की है। सपा-कांग्रेस अगर 181 सीटों पर ही उलझ गए तो बीजेपी को वॉकओवर मिल सकता है। 2024 लोकसभा में ढऊआ और संविधान के मुद्दे ने विपक्ष को बढ़त दी थी, लेकिन विधानसभा में सीट बंटवारा ही असली परीक्षा होगा। अभी दोनों खेमों में असली लड़ाई अपने-अपने घर के अंदर है। जो पहले अपना घर संभाल लेगा, वही 2027 में बाजी मारेगा।

पड़ोसी को बेटा बताकर नाम बदलवाया जमीन दान कराई और लाखों ठगे

हाजी जहीर चौहान पर 420 का केस, आरोपी फरार, सिटी कोतवाली में दर्ज एफआईआर में धर्म परिवर्तन, दस्तावेजों में हेराफेरी और आर्थिक धोखाधड़ी के गंभीर आरोप, गिरफ्तारी न होने से पुलिस पर सवाल, समाज में नाराजगी

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग



सिटी कोतवाली थाना में एक सनसनीखेज धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। शिकायतकर्ता राजवीर सिंह की शिकायत पर पुलिस ने हाजी जहीर चौहान के खिलाफ अपराध क्रमांक 584/26 के तहत भारतीय दंड संहिता की धारा 420 / भारतीय न्याय संहिता की धारा 318(4) के तहत प्रकरण दर्ज कर विवेचना में लिया है। एफआईआर में नाम परिवर्तन, शासकीय दस्तावेजों के दुरुपयोग, धार्मिक गतिविधियों में शामिल करने और संपत्ति व आर्थिक लेन-देन में धोखाधड़ी के गंभीर आरोप लगाए गए हैं। बताया जा रहा है कि एफआईआर दर्ज होने के इतने दिनों बाद भी आरोपी हाजी जहीर चौहान पुलिस की गिरफ्त से बाहर है और फरार बताया जा रहा है। गिरफ्तारी नहीं होने के कारण पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठ रहे हैं। वहीं मामला धर्मांतरण से जुड़ा होने के कारण समाज में भी नाराजगी बढ़ती जा रही है।

एफआईआर के अनुसार, आवेदक राजवीर सिंह और अनावेदक हाजी जहीर चौहान दोनों पड़ोसी हैं। एक-दूसरे को जानते-पहचानते हैं और पारिवारिक आना-जाना है। आरोप है कि हाजी जहीर चौहान ने आवेदक राजवीर सिंह को भ्रमित कर अपना पुत्र मानते हुए उसका नाम परिवर्तन कर यामीन चौहान कर शासकीय दस्तावेज एवं आधार कार्ड बनवाया।

दानपत्र कराकर जमीन हड़पी, फिर लोन लिया

शिकायत के अनुसार, दिनांक 18.03.2021 को हाजी जहीर चौहान पिता स्व. मैनुद्दीन चौहान निवासी वार्ड-31 शनिचरी बाजार, कांग्रेस भवन के सामने दुर्ग ने दानकर्ता के रूप में राजवीर सिंह उर्फ यामीन चौहान पिता हाजी जहीर चौहान को अपना सगा पुत्र बताते हुए पटवारी हल्का 24 वार्ड-5 मरारपारा, शीतला नगर दुर्ग स्थित खसरा नंबर 912/133, 912/225 कुल रकबा 0.0009 हेक्टेयर (924 वर्गफीट) का दानपत्र तैयार कराकर उप पंजीयक कार्यालय दुर्ग में पंजीयन कराया गया। आरोप है कि इसके पश्चात जहीर ने उक्त जमीन पर यामीन चौहान के नाम से जमा इस्माइल बैंक, भिलाई से 18,50,000 रुपए मॉर्गेज लोन लिया, जो यामीन चौहान के खाते में आया और उक्त रकम को जहीर ने रख लिया।

इकरारनामा और 40 लाख लेने का आरोप

एफआईआर में यह भी आरोप है कि हाजी जहीर चौहान द्वारा राजवीर उर्फ यामीन चौहान की पत्नी सिमरन कौर से 10 फरवरी 2017 को इकरारनामा तैयार कर 2,00,000 रुपए नगद प्राप्त किया। वहीं अनावेदक हाजी जहीर चौहान द्वारा राजवीर उर्फ यामीन चौहान को डराकर प्रॉपर्टी का काम शुरू कर रहा हूं कहकर 40,00,000 रुपए ले चुका है। इसके एवज में हाजी जहीर चौहान ने इक्वाटास बैंक खाता क्रमांक-100000710060 का 1,00,000 रुपए का एक चेक हस्ताक्षरयुक्त एवं एक कोरा चेक तथा उजीवन स्माल फायनेंस बैंक का हस्ताक्षर करके एक कोरा चेक, इंडसइंड बंधन बैंक का हस्ताक्षर करके एक कोरा चेक आवेदक राजवीर उर्फ यामीन चौहान को दिया है। एफआईआर में पुलिस ने निष्कर्ष दिया है कि इस तरह से अनावेदक हाजी जहीर चौहान के द्वारा आवेदक राजवीर उर्फ यामीन चौहान को अपना पुत्र बताकर नाम परिवर्तित कराकर छलपूर्वक रकम प्राप्त किया है। जो प्रथम दृष्टया धोखाधड़ी धारा 420 भादवि / 318(4) बीएनएस का अपराध घटित होना परिलक्षित होता है।

धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का आरोप

शिकायत में आरोप लगाया गया है कि आवेदक को धार्मिक गतिविधियों में शामिल कर आधार कार्ड एवं अन्य दस्तावेजों में नाम परिवर्तन के लिए प्रेरित किया गया। जहीर चौहान पर आरोप है कि उसने राजवीर सिंह को नमाज पढ़ने तथा हिंदू देवी-देवताओं से दूर रहने के लिए प्रेरित किया।

अन्य शिकायतकर्ताओं ने भी लगाए आरोप

एफआईआर में उल्लेख है कि अन्य शिकायतकर्ताओं ने भी यामीन चौहान उर्फ राजवीर सिंह द्वारा उधार की रकम वापस नहीं करने तथा अलग-अलग नामों से लेन-देन करने के आरोप लगाए हैं। जांच में यह तथ्य सामने आया कि जहीर चौहान एवं राजवीर सिंह पड़ोसी हैं तथा उनके बीच पुराने पारिवारिक संबंध हैं। शिकायत की जांच कर वैधानिक कार्यवाही के लिए नगर पुलिस अधीक्षक दुर्ग द्वारा 08 अक्टूबर 2026 को थाना प्रभारी, सिटी कोतवाली दुर्ग को निर्देशित किया गया था। इसके बाद थाना प्रभारी ने 10 अक्टूबर 2026 को रात्रि अधिकारी ड्यूटी के दौरान नगर पुलिस अधीक्षक महोदय दुर्ग के कार्यालय से प्राप्त शिकायत रिपोर्ट में अपराध पंजीबद्ध करने निर्देशित किया। प्रकरण की जांच के लिए सहायक उप निरीक्षक राम कृष्ण तिवारी को जांच अधिकारी नियुक्त किया गया है। पुलिस ने शिकायतकर्ता को एफआईआर की प्रति निःशुल्क प्रदान की है।

फरार शोएब ढेबर से सांटगांठ के आरोप में निरीक्षक विनीत दुबे निलंबित

रायपुर। फरार शोएब ढेबर से कथित सांटगांठ के आरोपों के बीच बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक बदी नारायण मीणा ने नारायणपुर में पदस्थ निरीक्षक विनीत दुबे को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। 16 नवंबर को जारी निलंबन आदेश में तेलीबांधा थाने के अपराध क्रमांक 403/2026 का उल्लेख है। रायपुर पुलिस कमिश्नर के 30 अक्टूबर के प्रतिवेदन के आधार पर दुबे का आचरण संदिग्ध तथा विभागीय मयार्दा के प्रतिकूल पाए जाने पर यह कार्रवाई की गई। निलंबन अवधि में उनका मुख्यालय रक्षित केंद्र नारायणपुर रहेगा। यह मामला कांग्रेस नेता आनंद कुकरेजा से कथित तौर पर 25 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने और जान से मारने की धमकी देने के आरोपों से जुड़ा है। फरार ढेबर की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने आधा दर्जन ठिकानों पर एकसाथ दबिश की योजना बनाई थी, लेकिन खम्हारडीह में पुलिस के पहुंचने से पहले ही ढेबर निकल गया था। गोपनीय सूचना लीक होने के संदेह पर पहले ACCU के आरक्षक शिवम द्विवेदी और राहुल सिंह गौतम को भी निलंबित किया जा चुका है।

करोड़ों की ठगी का आरोपी दीपक टंडन 19 नवंबर तक पुलिस रिमांड पर

रायपुर। करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी के मामलों में घिरे होटल कारोबारी अंबेडकर उर्फ दीपक टंडन को रायपुर पुलिस ने न्यायालय में पेश किया। कोर्ट ने उसे 19 नवंबर तक पुलिस रिमांड पर सौंप दिया है। पुलिस रिमांड के दौरान ठगी के मामलों, रकम के लेन-देन और अन्य संभावित संलिप्त लोगों से पूछताछ की जाएगी। कोर्ट में पेशी के दौरान सुरक्षा के मद्देनजर परिसर में पुलिस बल तैनात था। इस बीच आरोपी हंसता हुआ नजर आया और मीडिया की ओर देखकर थम्स-अप का इशारा भी किया। पुलिस के मुताबिक, दीपक टंडन पर करीब 1 करोड़ 27 लाख रुपये की धोखाधड़ी के साथ ब्लैकमेलिंग और धमकी के आरोप हैं। नेताओं और वरिष्ठ अधिकारियों को भी ठगी का शिकार बनाने का आरोप है। रायपुर के तेलीबांधा थाने में टंडन और उसकी पत्नी के खिलाफ पांच एफआईआर दर्ज हैं। कोरबा, सक्ती और बिलासपुर में भी मामले सामने आए हैं। हाल ही में आठवीं एफआईआर दर्ज की गई है। इसमें रु1.38 में ठेका दिलाने का झांसा देकर दो लोगों से 56 लाख रुपये लेने का आरोप है। इसी प्रकरण में उसे कोर्ट में पेश किया गया था।

सोनिया की किताब से गरमाई सियासत

पीएम पद ठुकराने का राज, राहुल-प्रियंका का अंदाज और मोदी को डिबेट चैलेंज

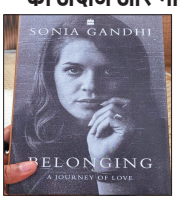

नई दृष्टिबिंदु / नईदिल्ली

रील्स और सोशल मीडिया के दौर में कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी की नई किताब 'Belonging: The Story of a Family' ने सियासी गलियारों में नई बहस छेड़ दी है। छह दशकों के राजनीतिक इतिहास को समेटने वाली इस किताब से गांधी परिवार के कई अनछुए पहलुओं पर फिर चर्चा शुरू हो गई है।

क्यों ठुकराया था पीएम का पद?

किताब को लेकर सबसे ज्यादा चर्चा सोनिया गांधी के प्रधानमंत्री न बनने के फैसले पर है। चर्चाओं के मुताबिक इसके पीछे कोई राजनीतिक मजबूरी नहीं, बल्कि पारिवारिक भावनाएं थीं। इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्याओं के बाद राहुल और प्रियंका को डर था कि कहीं वे अपनी मां को भी न खो दें। इसी वजह से उन्होंने सोनिया को पद स्वीकार नहीं करने दिया। किताब में प्रणब मुखर्जी की भूमिका और सीताराम केसरी से जुड़े विवादों का भी जिक्र है।

राहुल गांधी बनाम प्रियंका गांधी : दो अलग शैली

सियासी हलकों में राहुल और प्रियंका की अलग कार्यशैली पर भी गौर किया जा रहा है। राहुल बेहद आक्रामक अंदाज में संविधान, किसान, गरीब, चीन, अडानी-अंबानी जैसे राष्ट्रीय मुद्दे उठाते हैं, वहीं प्रियंका का जनता से जुड़ने का तरीका काफी अलग और भावनात्मक नजर आता है। दोनों की ये अलग रणनीति पार्टी के अंदर-बाहर चर्चा का विषय है।

मोदी को डिबेट चैलेंज

इसके साथ ही राहुल गांधी द्वारा पीएम नरेंद्र मोदी को दी गई खुली बहस की चुनौती भी सुर्खियों में है। जानकारों का मानना है कि अगर भारतीय राजनीति में सीधी और स्वस्थ बहस की संस्कृति विकसित होती है तो लोकतांत्रिक जवाबदेही बढ़ेगी और आने वाली पीढ़ियों को राजनीति का गंभीर माहौल देखने को मिलेगा।

यूपी पर भी नजर

राष्ट्रीय राजनीति के साथ यूपी के समीकरणों पर भी मंथन तेज है। दलित और नाराज वोट बैंक को साधने के लिए मायावती, चंद्रशेखर आजाद और विपक्षी गठबंधन की रणनीतियों पर सबकी निगाह है। देखना होगा कि ये वोट एकजुट रहते हैं या अलग-अलग खेमों में बंटते हैं।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में मंत्री परिषद की बैठक प्रारंभ

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की अध्यक्षता में सिविल लाइन स्थित मुख्यमंत्री निवास में मंत्री परिषद की बैठक प्रारंभ हो गई है। बैठक में प्रदेश के विकास, जनहित से जुड़े अहम प्रस्तावों और आगामी योजनाओं पर चर्चा की जा रही है। बैठक में कई महत्वपूर्ण फैसलों पर मुहर लगने की संभावना है। बैठक समाप्त होने के बाद लिए गए निर्णयों की विस्तृत जानकारी दी जाएगी।



फरार शोएब ढेबर से सांटगांठ के आरोप में निरीक्षक विनीत दुबे निलंबित

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

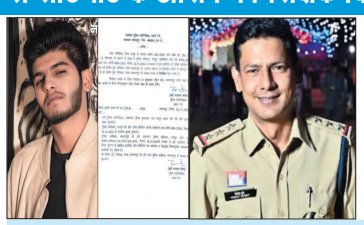

फरार शोएब ढेबर से कथित सांटगांठ के आरोपों के बीच बस्तर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक बदी नारायण मीणा ने पदस्थ निरीक्षक विनीत दुबे को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है।

16 नवंबर को जारी निलंबन आदेश में तेलीबांधा थाने के अपराध क्रमांक 403/2026 का उल्लेख है। रायपुर पुलिस कमिश्नर के 30 अक्टूबर के प्रतिवेदन के आधार पर दुबे का आचरण संदिग्ध तथा विभागीय मयार्दा के प्रतिकूल पाए जाने पर यह कार्रवाई की गई। निलंबन अवधि में उनका मुख्यालय रक्षित केंद्र नारायणपुर रहेगा।

यह मामला कांग्रेस नेता आनंद कुकरेजा से कथित तौर पर 25 करोड़ रुपये की रंगदारी मांगने और जान से मारने की धमकी देने के आरोपों से जुड़ा है। फरार ढेबर की गिरफ्तारी के लिए पुलिस ने आधा दर्जन ठिकानों पर एकसाथ दबिश की योजना बनाई थी, लेकिन खम्हारडीह में पुलिस के पहुंचने से पहले ही ढेबर निकल गया था। गोपनीय सूचना लीक होने के संदेह पर पहले ACCU के आरक्षक शिवम द्विवेदी और राहुल सिंह गौतम को भी निलंबित किया जा चुका है।

भिलाई में कथा के पहले दिन रामायण फिल्म पर बरसे चिन्मयानंद महाराज, डायरेक्टर-प्रोड्यूसर को दी नसीहत

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई



जीवन आनंद फाउंडेशन के तत्वावधान में सेक्टर-1, सेंट्रल एवेन्यू रोड पर आयोजित भव्य श्रीराम कथा के पहले दिन कथा वाचक चिन्मयानंद बापू ने रामायण पर बन रही फिल्मों को लेकर कड़ा संदेश दिया। कथा के दौरान महाराज ने कहा कि रामायण मनोरंजन का साधन नहीं, मयार्दा का शास्त्र है। इसे फिल्मी मसाला, ग्लैमर और काल्पनिक दृश्यों से नहीं दिखाया जा सकता। राम के चरित्र में थोड़ी सी भी मिलावट करोड़ों हिंदुओं की आस्था को ठेस पहुंचाती है।

उन्होंने डायरेक्टर-प्रोड्यूसर को नसीहत देते हुए कहा कि अगर रामायण पर फिल्म बनानी है तो पहले राम को जीना होगा, पढ़ना होगा। शास्त्रों की मयार्दा, संवादों की शुद्धता और पात्रों की पवित्रता से कोई समझौता नहीं होना चाहिए। फिल्म में श्रद्ध और भव्यता से ज्यादा श्रद्धा और सत्यता जरूरी है। महाराज ने कहा कि आज की पीढ़ी रामायण को कथा और फिल्मों से ही जान रही है। ऐसे में फिल्म निमार्ताओं की जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। गलत चित्रण पूरी पीढ़ी को भ्रमित कर देगा।

पहले दिन की कथा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचे। कथा 17 से 25 नवंबर तक चलेगी। आयोजक विनोद सिंह और आयोजन समिति ने श्रद्धालुओं से कथा में शामिल होने की अपील की है।



योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने मेगा ड्राइव का में शुभारंभ

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) नई दिल्ली एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के निर्देशानुसार तथा न्यायमूर्ति पार्थ प्रतीम साहू, कार्यकारी अध्यक्ष, छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के मार्गदर्शन एवं प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग के. विनोद कुजूर के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग द्वारा नालसा की 13 जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के उद्देश्य से 60 दिवसीय विशेष अभियान मेगा ड्राइव का शुभारंभ 16 नवंबर 2026 को ग्राम आमटी, जिला दुर्ग में किया गया।

यह विशेष अभियान 16 नवंबर 2026 से 14 जनवरी 2027 तक संचालित किया जाएगा। अभियान का मुख्य उद्देश्य जिले के ग्रामीण एवं सुदूर अंचलों में निवासरत जरूरतमंद, वंचित एवं पात्र व्यक्तियों की पहचान कर उन्हें निःशुल्क विधिक सहायता, उनके कानूनी अधिकारों तथा शासन की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ना है, ताकि कोई भी पात्र व्यक्ति जानकारी अथवा आवश्यक मार्गदर्शन के अभाव में अपने अधिकारों एवं शासकीय योजनाओं के लाभ से वंचित न रहे।

ग्राम आमटी में आयोजित शुभारंभ कार्यक्रम में श्रीमती सुषमा लकड़ा, अध्यक्ष, स्थायी लोक अदालत (जनोपयोगी सेवाएं), भूपेश कुमार बसंत, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट, दुर्ग तथा उमेश कुमार भगवतकर, सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस अवसर पर उपस्थित न्यायिक अधिकारियों द्वारा अभियान की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा गया कि विधिक



सेवा प्राधिकरण का उद्देश्य केवल न्यायालयों के माध्यम से विधिक सहायता उपलब्ध कराना ही नहीं, बल्कि समाज के ऐसे प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक पहुंचना भी है, जो जानकारी, संसाधनों अथवा अन्य कारणों से अपने अधिकारों एवं शासकीय योजनाओं के लाभ से वंचित रह जाता है।

मेगा ड्राइव के अंतर्गत ग्राम आमटी को विशेष रूप से चयनित कर वहां निवासरत पात्र हितग्राहियों की पहचान, उनकी सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं का आकलन तथा उन्हें संबंधित शासकीय विभागों एवं जनकल्याणकारी योजनाओं से जोड़ने की कार्यवाही की जाएगी। इसके लिए जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैरालीगल वालेंटियर्स द्वारा घर-घर संपर्क एवं सर्वेक्षण के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्तियों की जानकारी एकत्रित की जाएगी। साथ ही प्रत्येक सप्ताह ग्राम में विशेष जागरूकता एवं सहायता शिविर आयोजित किए जाएंगे, जिनमें ग्रामीणों को योजनाओं की पात्रता, आवेदन प्रक्रिया, आवश्यक दस्तावेज एवं उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी प्रदान की जाएगी। पात्र हितग्राहियों के आवेदन तैयार कराने, संबंधित विभागों तक पहुंचाने तथा उन्हें वास्तविक लाभ प्राप्त होने तक आवश्यक मार्गदर्शन एवं सहयोग उपलब्ध कराने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

अभियान के अंतर्गत नालसा की 13 प्रमुख योजनाओं के माध्यम से समाज के विभिन्न कमजोर एवं वंचित वर्गों तक पहुंच बनाई जाएगी। इनमें महिलाएं, बच्चे, वरिष्ठ नागरिक, दिव्यांगजन, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के व्यक्ति, श्रमिक, आपदा प्रभावित व्यक्ति तथा अन्य जरूरतमंद वर्ग शामिल हैं। इन वर्गों के लिए उपलब्ध विधिक सहायता, संरक्षण एवं कल्याणकारी प्रावधानों के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के साथ ही पात्र व्यक्तियों को आवश्यकतानुसार निःशुल्क विधिक सहायता उपलब्ध कराने की दिशा में भी कार्य किया जाएगा।

इस विशेष अभियान में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग के पैरालीगल वालेंटियर्स की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। वे ग्राम स्तर पर हितग्राहियों से सतत संपर्क स्थापित कर उनकी समस्याओं एवं आवश्यकताओं की पहचान करेंगे तथा विधिक सेवा प्राधिकरण और शासकीय विभागों के मध्य समन्वय स्थापित करने में सहयोग करेंगे।

खास खबर

भिलाई के तीन साहित्यकारों को मिलेगा राष्ट्रीय विद्योत्तमा साहित्य सम्मान







नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

मुक्तरयर साहित्य समिति, भिलाई के लिए गर्व का क्षण है। समिति के तीन साहित्यकारों की पुस्तकें राष्ट्रीय विद्योत्तमा साहित्य सम्मान-2027 के लिए चयनित हुई हैं।

विद्योत्तमा साहित्य समिति, नासिक (महाराष्ट्र) द्वारा प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित पुस्तकों का चयन कर रचनाकारों को सम्मानित किया जाता है। इस बार चयनित पुस्तकों में समिति की उपाध्यक्ष शीशलता की पुस्तक 'शालू के प्यार भरे नगमें', कोषाध्यक्ष संतोष जाटव जालौनी की पुस्तक 'फर्ज के दीपक जलायें' तथा सचिव शंकर भट्टाचार्य की पुस्तक 'दीवार पर टंगी तस्वीर' शामिल हैं।

तीनों रचनाकारों को आगामी 10 जनवरी 2027 को नासिक में आयोजित भव्य राष्ट्रीय सम्मान समारोह में सम्मान-पत्र, सम्मान राशि, प्रतीक चिह्न तथा शाल-श्रीफल प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि करीब दो वर्ष पूर्व समिति के अध्यक्ष एवं अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त कवि गोविन्द पाल को उनकी पुस्तक 'महज ये वायरस नहीं' के लिए राष्ट्रीय विद्योत्तमा भास्कर सम्मान मिल चुका है। एक ही संस्था के तीन रचनाकारों का राष्ट्रीय स्तर पर चयन भिलाई और छत्तीसगढ़ के साहित्यिक जगत के लिए बड़ी उपलब्धि है। इस पर नरेंद्र कुमार सिक्केवाल, भूषण चिपड़े, सोनिया सोनी, नेहा वार्ष्णेय सहित अनेक साहित्यकारों ने बधाई दी है।

आदित्य तिवारी को सीएसवीटीयू से पीएचडी की उपाधि, ई-कॉमर्स पर शोध को मिली सराहना



नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

आदित्य तिवारी ने छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय (सीएसवीटीयू), भिलाई के कंप्यूटर साइंस एवं इंजीनियरिंग विभाग में आयोजित पीएच.डी. की मौखिक शोध परीक्षा (ओपन डिफेंस) सफलतापूर्वक पूर्ण की। उन्हें डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी (पीएच.डी.) की उपाधि प्रदान की गई। उनका शोध कार्य डॉ. ज्योति पिल्लई, प्रोफेसर, भिलाई इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (बीआईटी), दुर्ग तथा डॉ. रेख राम जांगले, प्रोफेसर, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (एनआईटी), रायपुर के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ।

शोध प्रबंध का शीर्षक "Advanced Predictive Analytics for E-Commerce Applications" है। इसमें ई-कॉमर्स को अधिक प्रभावी बनाने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डीप लर्निंग तथा मशीन लर्निंग जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया गया है। शोध में ग्राहकों के खरीद व्यवहार का विश्लेषण, उत्पाद अनुशंसा, भविष्य की मांग का पूर्वानुमान, इन्वेंट्री प्रबंधन तथा व्यावसायिक निर्णय प्रक्रिया को बेहतर बनाने पर विशेष ध्यान दिया गया है। आदित्य तिवारी ने अपनी उपलब्धि का श्रेय शोध निर्देशक, विश्वविद्यालय, शिक्षकों, सहकर्मियों, मित्रों एवं परिवारजनों को दिया।

रिसाली के सभी 40 वार्डों में भाजपा को ही जीत दिलाना हमारा लक्ष्य : ललित चंद्राकर

दुर्ग ग्रामीण विधायक ने रिसाली निगम क्षेत्र के छह वार्ड शक्तिकेंद्रों की बैठकों में लिया हिस्सा



नई दृष्टिबिंदु / रिसाली-भिलाई

आगामी नगर निगम चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने रिसाली निगम क्षेत्र में चुनावी तैयारियां तेज कर दी हैं। इसी कड़ी में दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने रिसाली निगम क्षेत्र के विभिन्न वार्ड शक्तिकेंद्रों की बैठकों में शामिल होकर संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा की तथा कार्यकताओं के साथ चुनावी रणनीति पर विस्तार से चर्चा की। बैठकों के माध्यम से बूथ स्तर तक संगठन को मजबूत बनाने और सभी 40 वार्डों में भाजपा की जीत सुनिश्चित करने का संकल्प लिया गया।

शक्तिकेंद्रों की बैठकें तालपुरी बी ब्लॉक वार्ड क्रमांक 01, रुआबांधा भाठापारा कर्मा भवन वार्ड क्रमांक 02, रुआबांधा दुर्गा मंच वार्ड क्रमांक 03, रुआबांधा वार्ड क्रमांक 04, एचएससीएल कॉलोनी रिसाली वार्ड क्रमांक 05 तथा रुआबांधा सेक्टर नारी जागरण वार्ड क्रमांक 06 में आयोजित की गईं। बैठकों को संबोधित करते हुए विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि नगर निगम चुनाव में जीत का रास्ता बूथ से होकर गुजरता है। हमारा मूल मंत्र है- बूथ जीता तो चुनाव जीता। भाजपा का लक्ष्य रिसाली नगर निगम के सभी 40 वार्डों में जीत दर्ज करना है। उन्होंने कहा कि एक-एक कार्यकर्ता पार्टी की असली ताकत है। कार्यकताओं की मेहनत, समर्पण और संगठन के प्रति प्रतिबद्धता के बल पर ही भाजपा ने लोकसभा और विधानसभा चुनावों में जीत हासिल की है। अब इसी ऊर्जा और परिश्रम के साथ निगम चुनाव में भी जुटना होगा।

उन्होंने कार्यकताओं से आह्वान किया कि वे अपने-अपने बूथ को परिवार मानकर जिम्मेदारी निभाएं। प्रत्येक घर तक पहुंचकर मतदाताओं से सीधा संवाद स्थापित करें तथा केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी आम जनता तक पहुंचाएं। विधायक ने कहा कि रिसाली क्षेत्र में भाजपा के विकास कार्यों और डबल इंजन सरकार की उपलब्धियों के आधार पर पार्टी ऐतिहासिक जीत दर्ज करेगी।

इस अवसर पर रिसाली निगम चुनाव सहप्रभारी आशु चंद्रवंशी ने भी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि चुनाव की तैयारियों को अब अंतिम रूप देने का समय है। प्रत्येक बूथ पर पन्ना प्रमुख से लेकर बूथ समिति तक सभी कार्यकताओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। मतदाता सूची का पुनः निरीक्षण, नए मतदाताओं से संपर्क और प्रत्येक वार्ड में प्रभावी जनसंपर्क अभियान चुनावी सफलता के महत्वपूर्ण आधार हैं।

उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ता अनुशासन, समन्वय और एकजुटता के साथ अपनी जिम्मेदारी निभाएं। कोई भी बूथ कमजोर नहीं रहना चाहिए। वार्ड की प्रत्येक गली और हर घर तक भाजपा का संदेश पहुंचाना कार्यकताओं की जिम्मेदारी है। मजबूत संगठन और सक्रिय कार्यकताओं के सामूहिक प्रयास से ही चुनाव में बड़ी जीत हासिल की जा सकती है।

बैठकों में प्रमुख रूप से रिसाली निगम चुनाव सहप्रभारी आशु चंद्रवंशी, मंडल अध्यक्ष अनुपम साहू, जिला मंत्री शैलेन्द्र सेंडे, मंडल महामंत्री गुड्डू झा, दशरथ साहू, संयोजक सुनील साहू, बूथ अध्यक्ष अरविन्द नारखड़े, विपुल वर्मा, पार्षद शीला नारखड़े, स्नेहल, प्रेम साहू, सचिन गोस्वामी सहित बड़ी संख्या में बूथ स्तर के कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

धान खरीदी में किसान परेशान, सरकार की तैयारी अधूरी, अन्नदाता को परेशान करना बंद करे : अरुण वोरा

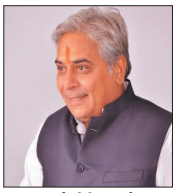

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ में धान खरीदी शुरू होते ही किसानों की परेशानियां सामने आने लगी हैं। दुर्ग शहर के पूर्व विधायक एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरुण वोरा ने धान खरीदी व्यवस्था को लेकर प्रदेश सरकार पर सवाल उठाते हुए कहा कि सरकार किसानों से धान खरीदने के बड़े-बड़े दावे तो कर रही है, लेकिन जमीनी स्तर पर किसान अपनी उपज बेचने के लिए सरकारी पोर्टल, तकनीकी खामियों और प्रशासनिक अव्यवस्थाओं से जूझने को मजबूर हैं।

अरुण वोरा ने कहा कि डिजिटल क्रॉप सर्वे में रकबे की गलत जानकारी दर्ज होने, एग्रीस्टाक पोर्टल में तकनीकी दिक्कतों और किसान पंजीयन में त्रुटियों के कारण किसानों के सामने गंभीर समस्याएं खड़ी हो रही हैं। आखिर किसान अपनी जमीन पर मेहनत करके धान पैदा करे या सरकारी दफ्तरों और ऑनलाइन पोर्टल के चक्कर काटता रहे? डिजिटल व्यवस्था के नाम पर किसानों को परेशान करना किसी भी स्थिति में स्वीकार्य नहीं है।

उन्होंने कहा कि धान खरीदी केंद्रों में टोकन की समस्या, तौल में देरी, बारदाने की उपलब्धता और धान उठाव जैसी व्यवस्थाओं पर सरकार को तत्काल ध्यान देना चाहिए। किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए कई दिनों तक इंतजार करना पड़े, यह सरकार की व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करता है।

अरुण वोरा ने सवाल किया कि जब सरकार ने 15 नवंबर से धान खरीदी शुरू करने की घोषणा की थी, तो क्या किसानों की पंजीयन संबंधी समस्याओं और तकनीकी खामियों को दूर करने की पर्याप्त तैयारी की गई थी? यदि नहीं, तो इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा? डिजिटल क्रॉप सर्वे में गलती सरकार की व्यवस्था से हो और उसका खामियाजा किसान भुगते, यह कहां का न्याय है?

उन्होंने मांग की कि डिजिटल क्रॉप सर्वे और एग्रीस्टाक से जुड़ी सभी शिकायतों का तत्काल निराकरण किया जाए। रकबे में त्रुटि सुधार के लिए विशेष शिविर लगाए जाएं, पात्र किसानों का पंजीयन सुनिश्चित किया जाए तथा प्रत्येक धान खरीदी केंद्र में टोकन, बारदाने, तौल और उठाव की समुचित व्यवस्था की जाए। अरुण वोरा ने कहा कि छत्तीसगढ़ का किसान प्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। किसानों के नाम पर राजनीति करने के बजाय सरकार को उनकी समस्याओं का समाधान करना चाहिए। किसानों को सरकारी अव्यवस्थाओं का शिकार बनाना बंद किया जाए। सरकार यह सुनिश्चित करे कि प्रदेश का कोई भी पात्र किसान अपनी मेहनत से पैदा किया गया धान बेचने से वंचित न रहे।

नन्हे-मुन्ने बच्चों ने संभाली यातायात जागरूकता की कमान, माता-पिता से की नियम पालन की अपील

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

यातायात पुलिस दुर्ग ने डीपीएस रिसाली के विद्यार्थियों को ट्रैफिक पार्क का शैक्षणिक भ्रमण कराकर यातायात नियमों और सड़क सुरक्षा की जानकारी दी।

बच्चों को ट्रैफिक सिग्नल, सड़क संकेतक, जेब्रा क्रॉसिंग और सड़क पार करने के सुरक्षित तरीकों की व्यावहारिक जानकारी दी गई। उन्हें दोपहिया वाहन पर हेलमेट, चारपहिया में सीट बेल्ट, गति सीमा का पालन और वाहन चलाते समय मोबाइल का



उपयोग न करने के महत्व को समझाया गया।

कार्यक्रम के दौरान बच्चों ने अपने माता-पिता और नागरिकों से अपील की - "मम्मी-पापा, हेलमेट पहनकर ही गाड़ी चलाना, कार में सीट बेल्ट लगाना, तेज रफ्तार से बचना और गाड़ी चलाते समय मोबाइल पर बात मत करना। सुरक्षित घर लौटना है, हमें आपका इंतजार है।" यातायात पुलिस का उद्देश्य बच्चों को सड़क सुरक्षा का संदेशवाहक बनाकर हर परिवार तक नियम पालन का संदेश पहुंचाना है।

दुर्ग स्टेशन पर टिकट चेकिंग के दौरान 2,09,295 रुपए राजस्व प्राप्त हुआ



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक डॉ सुस्कर विपुल विलासराव के निर्देश पर दुर्ग रेलवे स्टेशन पर किलाबंदी टिकट चेकिंग अभियान दिनांक 17 नवम्बर, 2026 को चलाया गया। जिसमें स्टेशन के सभी प्लेटफार्म, 16 ट्रेनों में किलाबंदी टिकट चेकिंग अभियान में कुल 280 मामलों को दर्ज कर 2,09,295 रुपए राजस्व प्राप्त किया गया।

किलाबंदी टिकट चेकिंग में बिना टिकट यात्रा करने वाले 159 यात्री पकड़े गए, जिससे 1,42,705 राजस्व प्राप्त हुआ। अनियमित टिकट लेकर यात्रा करने वाले 87 यात्रियों से 63090 रुपए राजस्व प्राप्त हुआ, अधिक लगेज लेकर यात्रा करने वाले 34 यात्रियों से 3500 रुपए राजस्व प्राप्त हुआ। इस टिकट चेकिंग का मुख्य उद्देश्य यात्रियों को टिकट लेने के प्रति जागरूक करना था।

इस टिकट चेकिंग अभियान में सहायक वाणिज्य प्रबंधक अविनाश कुमार आनन्द एवं 19 टिकट चेकिंग स्टाफ स्टाफ शामिल रहे। रेल प्रशासन यात्रियों को आगाह करता है कि वे यात्रा हेतु उचित टिकट एवं रेल परिसर मे प्रवेश करने के पहले प्लेटफॉर्म टिकट अवश्य खरीदें। रेलगाड़ी एवं रेल परिसर को साफ सुथरा रखने में भी रेल प्रशासन को सहयोग प्रदान करें।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे रायपुर रेल मंडल के वाणिज्य विभाग द्वारा समय-समय पर टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। जिससे यात्रियों को टिकट लेने के प्रति लगातार जागरूक किया जा रहा है, साथ ही यात्रियों को जागरूक किया जा रहा है कि वे उचित टिकट लेकर सही कोच में बैठे एवं अपनी सुखद यात्रा करें एवं टिकट चेकिंग में रेलवे प्रशासन को सहयोग करें।

जनशिकायत संबंधी प्रकरणों के निराकरण पर गंभीरतापूर्वक ध्यान दें अधिकारी - कलेक्टर सिंह

दुर्ग कलेक्टर अभिजीत सिंह ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में अधिकारियों की बैठक में समय-सीमा के लंबित प्रकरणों की विभागवार समीक्षा की। उन्होंने सेवा-सेतु, पीजीएन, जनदर्शन, वेबपोर्टल से संबंधित जनशिकायतों के प्रकरणों को गंभीरतापूर्वक निराकरण के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे प्रकरण अधिक दिनों तक लंबित न रखा जाए। समीक्षा के दौरान भारतमाला परियोजना अंतर्गत मुआवजा राशि वितरण और स्वामित्व योजना के अंतर्गत तैयार प्रकरणों की जानकारी ली। कलेक्टर ने कहा कि किसानों को स्वीकृत मुआवजा राशि का भुगतान संबंधित एसडीएम शीघ्र करें। ताकि जिले में भारतमाला परियोजना का कार्य शीघ्र पूर्ण कराया जा सके। कलेक्टर ने कहा कि जिले में धान खरीदी हेतु 10 ऐसे नोडल अधिकारी जिन्होंने अभी तक संबंधित उपार्जन केन्द्रों की व्यवस्था का जायजा नहीं लिये है, ऐसे अधिकारी को संबंधित विभाग के प्रमुख अधिकारी उपार्जन केन्द्र के भ्रमण हेतु निर्देशित करना सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने अधिकारियों को आगाह किया की धान उपार्जन केन्द्रों में खरीदी का कार्य प्रभावित न होने पावे इसलिए सभी नोडल अधिकारी समुचित प्रबंध कराना सुनिश्चित करेंगे। उन्होंने नये कम्पोजिट बिल्डिंग में विभिन्न विभागों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार कमरे उपलब्ध कराने शीघ्र जानकारी उपलब्ध कराने के निर्देश दिये ताकि नये भवन का झाइंग डिजाइन तैयार करवायी जा सके। बैठक में नगर निगम भिलाई की आयुक्त सुश्री सुरूचि सिंह, नगर निगम दुर्ग की आयुक्त सुश्री लीना कोसम, एडीएम विरेन्द्र सिंह, जिला पंचायत सीईओ बीके दुबे, अपर कलेक्टर श्रीमती सिल्ली थामस एवं खेमलाल वर्मा सभी एसडीएम, जनपद सीईओ सहित सभी अधिकारी उपस्थित थे।



दुर्ग में पेपरलेस कोर्ट का शुभारंभ न्यायिक व्यवस्था अब डिजिटल



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय बिलासपुर के निर्देशानुसार प्रधान जिला एवं सत्र न्यायालय दुर्ग में पेपरलेस कोर्ट का शुभारंभ किया गया। न्यायिक कार्यप्रणाली को आधुनिक, तकनीक आधारित, पारदर्शी एवं सुगम बनाने की दिशा में इसे महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। पेपरलेस कोर्ट से कागजी दस्तावेजों पर निर्भरता कम होगी और न्यायिक अभिलेखों का डिजिटल प्रबंधन होगा। इससे न्यायिक कार्य अधिक सुव्यवस्थित और दक्ष बनेंगे।

दुर्ग जिले में पहले से ही ई-साक्ष्य और ई-समन्स जैसी तकनीकी पहलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। ई-साक्ष्य से आपराधिक प्रकरणों में डिजिटल साक्ष्यों का संकलन और प्रस्तुतीकरण व्यवस्थित होगा, वहीं ई-समन्स से समन्स की तामिली त्वरित होगी। पेपरलेस कोर्ट की शुरूआत से इन पहलों को नई गति मिलेगी। इस पहल से न्यायिक जगत, अधिवक्ताओं और पक्षकारों में उत्साह है। इससे समय और संसाधनों की बचत के साथ न्यायिक प्रक्रिया और अधिक त्वरित व पारदर्शी होगी।

गौमाता भारतीय संस्कृति और अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग - राज्यपाल रमेन डेका

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

गोपाष्टमी पर गौशाला में की पूजा-अर्चना, पक्षी घर का किया लोकार्पण



राज्यपाल रमेन डेका गोपाष्टमी के अवसर पर विश्वगीता धेनु गोविंद पक्षी सेवा धाम, परसदा, कुम्हारी पहुंचे। उन्होंने भगवान श्री कृष्ण और गौ माता के दर्शन किए और उनकी पूजा अर्चना कर प्रदेश की खुशहाली की कामना की। उन्होंने गौधाम में स्थापित पक्षी घर का लोकार्पण किया। इस अवसर पर स्कूल शिक्षा मंत्री गजेंद्र यादव भी उपस्थित थे। राज्यपाल ने गौशाला का भ्रमण किया और गौ माता को चारा खिलाकर उनकी सेवा की।

राज्यपाल श्री डेका ने प्रदेशवासियों को गोपाष्टमी पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि गोपाष्टमी भगवान श्रीकृष्ण के गोपाल स्वरूप और गौ माता के प्रति हमारी श्रद्धा एवं आस्था का पर्व है। भारतीय संस्कृति में गौ माता का विशेष स्थान है। हालांकि गौसेवा केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि बीमार, घायल, वृद्ध और बेसहारा गोवंश की देखभाल करना भी हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि सड़कों पर बढ़ते यातायात के कारण गोवंश के दुर्घटनाग्रस्त होने की घटनाएं सामने आती हैं। ऐसे में घायल गोवंश को समय पर उपचार उपलब्ध कराना आवश्यक है। इस दिशा में गौ अस्पताल और रेस्क्यू सेंटर महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

राज्यपाल ने कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था सदियों से गौवंश पर आधारित रही है। गांवों में गोबर का उपयोग अनेक कार्यों में किया जाता था। गोबर और मिट्टी से बने घर पर्यावरण के अनुकूल होते थे। समय के साथ हमारी पारंपरिक जीवनशैली में बदलाव आया है। हमें फिर से प्रकृति के अनुकूल जीवन पद्धति अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों को बढ़ावा देने पर जोर देते हुए कहा कि गोबर से बायोगैस और जैविक खाद को बढ़ावा देने से पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिल सकती है।

श्री डेका ने कहा कि गौ माता की सेवा और सतत विकास की अवधारणा एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में गोवंश का महत्वपूर्ण योगदान है। उन्होंने लोगों से आग्रह किया कि वे गौशालाओं में आएं, कुछ समय बिताएं और गौ माता की सेवा में सहभागी बनें। इससे सेवा भाव विकसित होने के साथ मानसिक शांति भी मिलती है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक ऐसा कार्य अवश्य करना चाहिए, जिसमें किसी प्रकार के लेन-देन की भावना न हो और जिससे समाज का भला हो।

इस अवसर पर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि हमें जैविक और प्राकृतिक खेती को अपनाने का संकल्प लेना चाहिए। गोबर से बनी खाद के उपयोग से खेती की गुणवत्ता और मिट्टी की उर्वरता बढ़ाई जा सकती है। उन्होंने कहा कि गोबर खाद के उपयोग को बढ़ावा देने से गोवंश का महत्व बढ़ेगा और लोग उनकी बेहतर देखभाल के लिए प्रेरित होंगे। प्रेरक वक्ता उज्ज्वल पाटनी ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए गौसेवा के लिए प्रत्येक व्यक्ति से अपनी जिम्मेदारी निभाने का आह्वान किया।

गौधाम के संरक्षक गोपाल प्रसाद सुल्तानिया ने कहा कि सड़कों पर गौ माताओं की दुर्दशा और उनकी देखभाल की आवश्यकता को देखते हुए इस गौधाम की परिकल्पना की गई थी, जिसे अब साकार रूप दिया गया है। प्रमुख ट्रस्टी श्री सुधीर सुल्तानिया ने स्वागत उद्बोधन दिया। इस अवसर पर विधायक अनुज शर्मा, संपत अग्रवाल, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल सहित अनेक जनप्रतिनिधि, सुल्तानिया परिवार के सदस्य, गौसेवक एवं गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

खास खबर

उप मुख्यमंत्री साव ने पीएम स्वनिधि महोत्सव में स्ट्रीट वेंडर्स के स्टॉल्स का किया अवलोकन, चाय, गुपचुप और फरा का लिया स्वाद



नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-बिलासपुर

उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव ने बिलासपुर में स्वनिधि महोत्सव में पीएम स्वनिधि के हितग्राहियों द्वारा लगाए गए फूड स्टॉल्स का अवलोकन किया। उन्होंने उत्पादों की निर्माण प्रक्रिया, बिक्री और आमदनी के बारे में आत्मीयता से चर्चा की तथा कारोबार बढ़ाने के उनके प्रयासों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने स्टॉल्स के भ्रमण के दौरान अन्य अतिथियों के साथ कुल्हड़ में चाय, गुपचुप और फरा का स्वाद भी लिया।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने स्वनिधि महोत्सव में आयोजित 'कुल्हड़ पर चौपाल' में पीएम स्वनिधि योजना के महिला लाभार्थियों के साथ मिट्टी के कुल्हड़ में चाय पीते हुए आत्मीय संवाद किया। उन्होंने महिलाओं से उनके व्यवसाय, अनुभवों और पीएम स्वनिधि योजना से मिले लाभों के बारे में जानकारी ली। इस दौरान महिला हितग्राही काफी उत्साहित नजर आईं। सहज और आत्मीय वातावरण में हुई इस चर्चा ने महोत्सव को खास बना दिया। कुल्हड़ के उपयोग के माध्यम से स्थानीय परंपरा को प्रोत्साहित करने और प्लास्टिक के विकल्प को अपनाने का संदेश भी दिया गया।

कृषि विश्वविद्यालय में आम का उच्च सघन बागवानी कार्यक्रम प्रारंभ, कुलपति डॉ. चंदेल सहित वरिष्ठ अधिकारियों ने किया आम के उन्नत किस्मों का रोपण

रायपुर। इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में कुलपति डॉ. गिरीश चंदेल के मार्गदर्शन में उच्च सघनता बागवानी कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इसके तहत विश्वविद्यालय प्रक्षेत्र में आम की उन्नत किस्मों का रोपण किया गया। कुलपति डॉ. चंदेल सहित विश्वविद्यालय के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा आम की अर्का उदय एवं अर्का सुप्रभात जैसी उन्नत किस्मों का सघन रोपण किया गया। उच्च सघनता बागवानी योजना के तहत विश्वविद्यालय प्रक्षेत्र में दो एकड़ क्षेत्र में आम की उन्नत किस्मों के दो सौ से भी अधिक पौधों का रोपण किया जा रहा है। यहां के पौधों के बीच में अदरक, जिमीकंद आदि अन्तर्वर्ती फसलें भी लगाई जाएंगी। इस अवसर पर डा. चंदेल ने फल विज्ञान विभाग द्वारा संचालित अन्य गतिविधियों का जायजा भी लिया।

उच्च सघनता रोपण प्रणाली आम की वैज्ञानिक बागवानी की एक महत्वपूर्ण तकनीक है। परंपरागत आम बागों में सामान्यतः 10 .10 मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाते हैं, जिससे प्रति हेक्टेयर पौधों की संख्या सीमित रहती है। इसके विपरीत उच्च सघनता प्रणाली में 5 .5 मीटर दूरी पर लगभग 400 पौधे प्रति हेक्टेयर लगाए जा सकते हैं। इस प्रणाली का उद्देश्य सीमित भूमि में अधिक पौधे लगाकर उत्पादन क्षमता बढ़ाना तथा उपलब्ध संसाधनों का बेहतर उपयोग करना है। फल विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. घनश्याम साहू ने बताया कि उच्च सघनता आम बाग की स्थापना के लिए अच्छी जल निकास वाली उपजाऊ भूमि का चयन करना चाहिए।

मेहनत को मिली पूंजी, छोटे कारोबारियों के सपनों को उड़ान दे रही प्रधानमंत्री स्वनिधि : अरुण साव

पीएम स्वनिधि के संभाग स्तरीय सम्मेलन में शामिल हुए उप मुख्यमंत्री, स्मार्ट ठेला पंजीयन का किया शुभारंभ

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर



उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव ने कहा कि ठेला-खोमचा लगाकर और छोटे व्यवसाय से परिवार चलाने वाले लोगों की मेहनत को पीएम स्वनिधि योजना ने पूंजी का सहारा दिया है। कभी साहूकारों का ब्याज चुकाने में खर्च हो जाने वाली कमाई अब कारोबार बढ़ाने, बच्चों की पढ़ाई और परिवार की खुशहाली में काम आ रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मंशा है कि छोटे कारोबारी आर्थिक रूप से मजबूत बनें और सम्मान के साथ आगे बढ़ें। एक-एक परिवार आत्मनिर्भर होगा, तभी प्रदेश और देश विकसित होगा।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने बिलासपुर के लाल बहादुर शास्त्री स्कूल मैदान में आयोजित संभाग स्तरीय स्वनिधि महोत्सव में योजना के हितग्राहियों को संबोधित करते हुए ये बातें कहीं। उन्होंने कार्यक्रम में स्मार्ट ठेला पंजीयन का शुभारंभ और इसके पोस्टर का विमोचन किया। उन्होंने कहा कि पथ विक्रेताओं को पहचान पत्र मिलने से व्यवसाय करने में सुविधा होगी। श्री साव ने हितग्राहियों को यूपीआई से जुड़े डिजिटल भुगतान साउंड बॉक्स भी वितरित किए। उन्होंने सफल पथ विक्रेताओं और उनके प्रतिभाशाली बच्चों को मंच पर सम्मानित भी किया। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने कहा कि छोटे व्यवसायियों का जीवन संघर्ष और परिश्रम से भरा होता है। पहले कारोबार के लिए साहूकारों से कर्ज लेना पड़ता था और मेहनत की कमाई का बड़ा हिस्सा ब्याज में चला जाता था। कोरोना काल में इन परिवारों के सामने आजीविका का गंभीर संकट खड़ा हो गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उनकी कठिनाइयों को समझा और वर्ष 2020 में पीएम स्वनिधि योजना शुरू की। बिना गारंटी के आसान ऋण उपलब्ध होने से लाखों पथ विक्रेताओं को अपना कारोबार फिर खड़ा करने और आगे बढ़ाने का अवसर मिला।

श्री साव ने कहा कि योजना में समय पर ऋण चुकाने वाले हितग्राही क्रमशः 15 हजार, 25 हजार और 50 हजार रुपए तक का ऋण लेकर व्यवसाय का विस्तार कर सकते हैं। उन्होंने हितग्राहियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि नियमित भुगतान कर अगले चरण का लाभ लें, आमदनी बढ़ाएं और बच्चों को अच्छे विद्यालयों में पढ़ाएं। सरकार की अन्य जनकल्याणकारी योजनाओं से भी जुड़ें, ताकि पूरा परिवार सक्षम बने। उन्होंने डिजिटल लेन-देन अपनाने और पात्र हितग्राहियों के लिए उपलब्ध 30 हजार रुपए तक की यूपीआई लिंक्ड क्रेडिट कार्ड सुविधा का लाभ लेने के लिए भी प्रेरित किया। श्री साव ने कहा कि बिलासपुर लगातार उपलब्धियों के नए अध्याय जोड़ रहा है। स्वच्छता के क्षेत्र में बिलासपुर को देश में दूसरा तथा छोटे शहरों की श्रेणी में बिल्हा को पहला स्थान मिला है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने बिलासपुर में प्रदेश की पहली ऑटोमेटेड कार पार्किंग का उद्घाटन किया है। अब पीएम स्वनिधि योजना के उत्कृष्ट क्रियान्वयन के लिए भी राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिलने जा रहा है। उन्होंने बताया कि 20 नवम्बर को नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ और बिलासपुर को सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने इन उपलब्धियों के लिए नगरीय निकायों, बैंकर्स, अधिकारियों और हितग्राहियों को बधाई दी।



विधायक सुशांत शुक्ला ने अपने संबोधन में कहा कि कोई काम छोटा नहीं होता। पथ विक्रेता भारतीय अर्थव्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। पीएम स्वनिधि उन्हें आर्थिक संबल के साथ आत्मविश्वास और गौरव प्रदान कर रही है। महापौर श्रीमती पूजा विधानी ने कहा कि पीएम स्वनिधि योजना छोटे कारोबारियों को आत्मनिर्भर बनाकर सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर दे रही है। उन्होंने योजना से वंचित पात्र लोगों को जोड़ने तथा ऋण प्रक्रिया सरल बनाने पर जोर दिया। कोरबा की महापौर श्रीमती संजू देवी राजपूत ने भी छोटे व्यवसायियों को निजी कर्ज की कठिनाइयों से राहत दिलाने में योजना की भूमिका का उल्लेख किया।

नगरीय प्रशासन विभाग के प्रमुख सचिव सोनमणि बोरा ने अपने स्वागत उद्बोधन में कहा कि हाट-बाजारों, सड़कों और चौक-चौराहों पर छोटे व्यवसाय करने वाले लोग नागरिकों की दैनिक जरूरतें पूरी करते हैं। उनका योगदान समाज और अर्थव्यवस्था दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। सम्मेलन में ऐसे अनेक हितग्राही उपस्थित हैं, जिन्होंने तीनों चरणों में ऋण लेकर अपने कारोबार को आगे बढ़ाया है। उन्होंने बैंकर्स से आग्रह किया कि ऋण की औपचारिकताओं को सरल बनाएं और छोटे उद्यमियों के सहयोगी बनें। ये उद्यमी स्वयं की आजीविका के साथ रोजगार के अवसर भी पैदा करते हैं और विकसित भारत की बुनियाद मजबूत बनाते हैं।

सम्मेलन में सफल पथ विक्रेताओं के जीवन में आए बदलावों पर आधारित वीडियो प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में बताया गया कि राज्य में अब तक 1.23 लाख से अधिक हितग्राहियों को 282 करोड़ रुपए का ऋण उपलब्ध कराया गया है। योजना में बिना गारंटी ऋण के साथ 7 प्रतिशत ब्याज सब्सिडी तथा डिजिटल लेन-देन पर अतिरिक्त प्रोत्साहन का प्रावधान है। भारतीय स्टेट बैंक के अधिकारियों ने वित्तीय समावेशन और डिजिटल धोखाधड़ी से बचाव की जानकारी दी। स्वनिधि चौपाल में हितग्राहियों की समस्याएं सुनकर उनका निराकरण किया गया। उत्कृष्ट कार्य करने वाले बैंकों और नगरीय निकायों को भी सम्मानित किया गया। नगरीय प्रशासन विभाग के संचालक नीलेशकुमार क्षीरसागर, सुडा के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुमित अग्रवाल, बिलासपुर के कलेक्टर संजय अग्रवाल, बिलासपुर नगर निगम के आयुक्त प्रकाश सर्वे, कोरबा निगम आयुक्त आशुतोष पाण्डेय, बिलासपुर जिला पंचायत के अध्यक्ष राजेश सूर्यवंशी, नगर निगम सभापति विनोद सोनी, दीपक सिंह और मोहित जायसवाल सहित जनप्रतिनिधि, विभागीय अधिकारी, बैंकों के प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में हितग्राही सम्मेलन में शामिल हुए।

कार्यक्रम

जनजातीय गौरव दिवस समारोह में उपमुख्यमंत्री ने जनकल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यों की दी जानकारी

भगवान बिरसा मुंडा के आदर्शों पर आगे बढ़ रहा है छत्तीसगढ़, जनजातीय समाज का विकास सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता - विजय शर्मा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-बालोद

जनजातीय गौरव दिवस के अवसर पर भगवान बिरसा मुंडा की जयंती के उपलक्ष्य में बालोद में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में उप मुख्यमंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री विजय शर्मा शामिल हुए। इस समारोह में कांकेर सांसद भोजराज नाग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस अवसर पर उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने भगवान बिरसा मुंडा सहित देश की आजादी के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाले जनजातीय वीर स्वतंत्रता सेनानियों को नमन किया। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का जीवन, संघर्ष और समाज के प्रति समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उनके आदर्शों पर चलते हुए छत्तीसगढ़ सरकार जनजातीय समाज के सम्मान, उत्थान और सर्वांगीण विकास के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

भगवान बिरसा मुंडा का जीवन युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत : उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने समारोह में बच्चों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक एवं संगीतमय कार्यक्रमों की सराहना की। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ने मात्र 25 वर्ष की आयु में समाज और देश के लिए जो योगदान दिया, वह सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने जनजातीय समाज के संघर्ष, साहस और बलिदान का उल्लेख करते हुए कहा कि बस्तर सहित छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों के जनजातीय वीरों ने देश की स्वतंत्रता और समाज के अधिकारों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

शासकीय योजनाओं से गांवों में पहुंच रही विकास की रोशनी : उप मुख्यमंत्री ने जिले में संचालित विभिन्न विकास कार्यों और जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि सरकार का प्रयास है कि प्रत्येक गांव और प्रत्येक जरूरतमंद परिवार तक मूलभूत सुविधाएं पहुंचें। उन्होंने बताया कि जिले में पेयजल के लिए कनेरी-धनोरा मल्टी विलेज स्कीम का कार्य तेजी से पूरा किया जा रहा है। इस योजना से अनेक गांवों के लोगों को स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि बालोद जिले का नारायंग प्रदेश का पहला ऐसा गांव बनने की दिशा में अग्रसर है, जहां सभी घरों और शासकीय कार्यालयों को सौर ऊर्जा से संचालित करने की पहल की जा रही है। इससे स्वच्छ ऊर्जा को बढ़ावा मिलने के साथ बिजली पर निर्भरता भी कम होगी।

प्रधानमंत्री आवास योजना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि सरकार ग्रामीण क्षेत्रों के पात्र गरीब परिवारों को पक्का मकान उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। वहीं, महतारी वंदन योजना के माध्यम से महिलाओं को नियमित आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है, जिससे वे आर्थिक रूप से सशक्त बन सकें और परिवार की जरूरतों को पूरा करने में अपनी भागीदारी बढ़ा सकें।

बस्तर में लौट रही शांति और विकास की रौनक : उप मुख्यमंत्री श्री शर्मा ने बस्तर क्षेत्र में हो रहे बदलावों का उल्लेख करते हुए कहा कि माओवाद के प्रभाव में कमी आने के साथ ही क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और विकास का वातावरण मजबूत हो रहा है। आज बस्तर के गांवों में दशहरा जैसे पारंपरिक पर्वों में देवी-देवताओं और श्रद्धालुओं की भागीदारी बढ़ रही है। गांवों में फिर से मेले, उत्सव और सामाजिक मेल-मिलाप की परंपराएं उत्साह के साथ जीवंत हो रही हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ते हुए वहां के लोगों को बेहतर अवसर और सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में जनजातीय समाज का हो रहा बहुमुखी विकास - सांसद भोजराज नाग

समारोह में सांसद श्री नाग ने जनजातीय समाज के सम्मान, अधिकारों और कल्याणकारी योजनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जनमन योजना, जनजातीय उत्कर्ष अभियान और महतारी वंदन योजना से जनजातीय क्षेत्रों में विकास को नई गति मिल रही है। इस अवसर पर उन्होंने जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास, स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान और केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में जनजातीय समाज को सम्मान, अधिकार और विकास के नए अवसर मिल रहे हैं। सरकार जनजातीय समुदाय के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक उत्थान के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

जनजातीय समाज को मिला सम्मान और नई पहचान : सांसद श्री नाग ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास और स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान को सम्मान देने के उद्देश्य से 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की। इससे देशभर में जनजातीय वीरों के बलिदान और संघर्षों को नई पहचान मिली है। उन्होंने कहा कि देश के सर्वोच्च संवैधानिक पद पर आदिवासी समाज की बेटी श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का राष्ट्रपति के रूप में आसीन होना जनजातीय समाज के लिए गौरव की बात है। इसी तरह छत्तीसगढ़ में जनजातीय समाज से आने वाले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के नेतृत्व में प्रदेश का सर्वांगीण विकास हो रहा है। उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के कार्यकाल में वर्ष 1999 में अलग से जनजातीय कार्य मंत्रालय के गठन को भी जनजातीय समाज के हित में महत्वपूर्ण कदम बताया।



कलेक्टर श्रीमती दिव्या उमेश मिश्रा ने अपने उद्बोधन में कहा कि जनजातीय समाज के उत्थान और शासकीय योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने पर जोर दिया जा रहा है। उन्होंने बताया कि जिले के 186 गांव घरती आबा जनजातीय ग्राम उत्कर्ष अभियान में शामिल, शिक्षा, खेल, स्वास्थ्य और देश सेवा में योगदान देने वाली प्रतिभाओं का सम्मान किया जा रहा है।

समारोह स्थल पर विभिन्न शासकीय विभागों द्वारा आकर्षक प्रदर्शनियां लगाई गई। इनके माध्यम से शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं, विकास कार्यों और हितग्राहीमूलक कार्यक्रमों की जानकारी आम नागरिकों को दी गई। कलेक्टर ने कहा कि विभागों के समन्वित प्रयासों से जिले में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में विकास को गति मिल रही है। योजनाओं की जानकारी जन-जन तक पहुंचाकर अधिक से अधिक पात्र हितग्राहियों को लाभान्वित करना आवश्यक है।

कार्यक्रम के दौरान जनजातीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के परिजनों, शहीद परिवारों तथा देश की सेवा में योगदान देने वाले वीर सैनिकों के परिवारों को सम्मानित किया गया। इसके अलावा शिक्षा, खेल और स्वास्थ्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल करने वाले प्रतिभावान व्यक्तियों को भी सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर पद्मश्री डोमार सिंह कुंवर, राज्य एथलेटिक संघ के उपाध्यक्ष सौरभ लूनिया, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती तारणी पुष्पेंद्र चंद्राकर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष तोमन साहू, नगर पालिका परिषद बालोद की अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा चौधरी, नगर पालिका परिषद दल्ली राजहरा के अध्यक्ष तोरण साहू, नगर पालिका परिषद बालोद के उपाध्यक्ष कमलेश सोनी, नगर पंचायत डौंडीलोहारा के अध्यक्ष लाल निवेंद्र सिंह टेकाम, जनपद अध्यक्ष बालोद श्रीमती सरस्वती टेमरिया, जनपद पंचायत गुंडरदेही के अध्यक्ष पुरुषोत्तम चंद्राकर, जनपद पंचायत अध्यक्ष डौंडी मुकेश कौड़ो, आदिवासी समाज के प्रतिनिधिगण, अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में जनजातीय समुदाय के प्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

संपादकीय

राजनीतिक उपलब्धि से ज्यादा जवाबदेही का सवाल

तेलंगाना के हैदराबाद में सरकार के सहयोग से कांग्रेस और राहुल गांधी ने दो दिवसीय भारत समिट का आयोजन किया और उसका मकसद बताया कि विश्व की प्रगतिशील ताकतों को एक मंच पर लाना। इससे विश्व की प्रगतिशील ताकतों के एक मंच पर आने की उतनी चर्चा नहीं हुई जितनी इस मंच के मोदी सरकार व भारत विरोधी रुख की चर्चा हुई है। ऐसा हुआ है तो इसके लिए राहुल गांधी और कांग्रेस दोषी हैं क्योंकि उसने इस समिट में ऐसे लोगों को ही बुलाया जो विदेशों में कट्टर मोदी विरोधी माने जाते हैं। इससे तो देश में कई तरह के सवाल पैदा हो गए हैं। क्या राहुल गांधी को अपनी पार्टी के नेताओं और विपक्षी गठबंधन INDIA के सहयोगियों पर अब भरोसा नहीं रह गया है कि वे उनके साथ मिलकर नरेंद्र मोदी को चुनाव में हरा सकते हैं? क्या कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों में ऐसे नेताओं की कमी हो गई है जो भारतीय मतदाताओं को प्रभावित नहीं कर पा रहे और चुनावी राजनीति में जीत नहीं पा रहे हैं? राहुल गांधी को विदेशी राजनीतिक हस्तियों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों से जुड़े लोगों को भारत क्यों बुलाना पड़ा?

इसकी एक वजह तो यह हो सकती है कि अब तक राहुल गांधी विदेशों में जाकर मोदी सरकार व भारत में लोकतंत्र की आलोचना करते थे, विदेशी ताकतों से भारत में हस्तक्षेप की बात करते थे, तब विदेशों से राहुल गांधी को कोई समर्थन नहीं मिला था, अब वह वोट चोरी के मुद्दे पर देश व दुनिया के लोगों को दिखाना चाहते हैं कि देखो विदेश के नेता भी अब मानते हैं कि भारत में वोट चोरी हो रही है। चुनाव जिस तरह होने चाहिए नहीं हो रहे हैं। राहुल गांधी के नेतृत्व के कारण कांग्रेस चुनाव नहीं हार रही है, वोट चोरी होने के कारण कांग्रेस और राहुल गांधी चुनाव हार रहे हैं। यही वजह है कि राहुलगांधी ने विदेशी मेहमानों को बुलाकर उनसे भारत की चुनी हुई सरकार के खिलाफ बयान दिलवाए, भारतीय लोकतंत्र पर सवाल उठवाए गए और राहुल गांधी खुद मंच पर बैठकर इन टिप्पणियों पर तालियां बजाते नजर आए। यह तो भारत की राजनीति में विदेशी हस्तक्षेप को आमंत्रित करने जैसा है? इससे तो यही संदेश जाता है कि कांग्रेस और राहुल गांधी इतने कमजोर हो गए हैं कि उनको नरेंद्र मोदी सरकार का राजनीतिक विरोध के लिए विदेशी ताकतों के कंधों का सहारा लेना पड़ रहा है?

भारत समिट में सबसे ज्यादा चर्चा इटली के जियाकोमो फिलिबेक की रही। वह भी इसलिए की फिलिबेक ने सम्मेलन में राहुल गांधी के समर्थन में भारतीय लोकतंत्र को निशाना बनाया, खुले मंच से नारा लगाया कि 'वोट चोर, गद्दी छोड़!' उन्होंने भारत में लोकतंत्र पर हमला होने का दावा करते हुए अंतरराष्ट्रीय समुदाय से राहुल गांधी और कांग्रेस के साथ खड़े होने की अपील भी की। और यह संदेश देने में सफल रहे कि राहुल गांधी को मोदी सरकार के विरोध व वोटचोरी के मामले में विदेश से समर्थन मिल रहा है। लेकिन इससे यह सवाल भी पैदा हो गया है कि क्या भारत की राजनीति में विदेशी नेताओं को इस तरह हस्तक्षेप करने का खुला मंच देना कांग्रेस की नई राजनीतिक रणनीति है? भारत समिट में इक्वाडोर के पूर्व विदेश मंत्री गुइलाउम लॉन्ग, ओपन सोसाइटी फाउंडेशन के पूर्व अध्यक्ष पैट्रिक गैस्पर्ड और एमनेस्टी इंटरनेशनल के पूर्व महासचिव सलील शेट्टी जैसे नामों की मौजूदगी और निमंत्रण को लेकर भी भाजपा को सवाल उठाने का मौका मिला है कि सम्मेलन से जुड़े कुछ लोगों के संबंध जॉर्ज सोरोस समर्थित संस्थाओं और नेटवर्क से रहे हैं।

भारत व मोदी विरोधी लोगों को भारत में बुलाकर उनको मंच देने का मकसद क्या भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक विशेष राजनीतिक नैरेटिव तैयार करने की कोशिश है? क्योंकि इसी मंच पर राहुल गांधी ने कहा कि भारत अब लोकतंत्र नहीं रह गया है। उन्होंने मोदी सरकार को सत्ता से हटाने का भरोसा जताया और विदेशी मेहमानों के सामने भारतीय राजनीतिक व्यवस्था, चुनाव और संस्थाओं पर गंभीर आरोप लगाए। देखा जाये तो जब देश का नेता प्रतिपक्ष ही कभी विदेशी धरती से और कभी देसी धरती पर विदेशी प्रतिनिधियों को बुलाकर उनके सामने अपने देश के लोकतंत्र को कठघरे में खड़ा कर रहा हो, तब सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर वह दुनिया को क्या संदेश देना चाहता है?

सीधी सी बात है कि राहुल गांधी जो चाहते थे वह तो मंच से कहा गया लेकिन इससे कांग्रेस को नुकसान यह हुआ है कि राहुल गांधी को भाजपा ने सवालों के कठघरे में खड़ा कर दिया है। राजनीतिक तौर पर देखें तो कांग्रेस को जितना फायदा नहीं हुआ उसके ज्यादा नुकसान होने की आशंका है। कांग्रेस ने इस सम्मेलन के जरिए भाजपा को एक बड़ा मुद्दा थमा दिया है। अब चुनावी बहस केवल वोट चोरी के आरोपों तक नहीं रहेगी, बल्कि विदेशी राजनीतिक हस्तियों की भूमिका, उनके संस्थागत संबंधों और राहुल गांधी की राजनीतिक स्वीकार्यता पर भी सवाल उठेंगे। सवाल यह भी उठता है भारत का प्रधानमंत्री कौन बनेगा, इसका फैसला भारत के मतदाता करेंगे या विदेशी राजनीतिक संगठनों के प्रतिनिधि? क्या विदेशी नेताओं से अपने राजनीतिक नार लगवाकर कांग्रेस भारतीय जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता बढ़ा लेगी? सबसे बड़ा सवाल यह है कि जब दिवंगत मेहमान भारत के लोकतंत्र पर सवाल उठाएं, तब क्या लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष की क्या जिम्मेदारी होती है, उन्होंने अपनी जिम्मेदारी क्यों नहीं निभाई?, सच तो यह है कि हैदराबाद का यह सम्मेलन कांग्रेस के लिए राजनीतिक उपलब्धि से ज्यादा राजनीतिक जवाबदेही का सवाल बन गया है।

अन्तरराष्ट्रीय छात्र दिवसः युवा चेतना से ही बनेगा उज्ज्वल भविष्य

महेन्द्र तिवारी

विद्यार्थी किसी भी समाज और राष्ट्र की सबसे बड़ी पूँजी होते हैं। उनके भीतर भविष्य के सपने होते हैं, वर्तमान को समझने की जिज्ञासा होती है और व्यवस्था को बेहतर बनाने का साहस भी होता है। विद्यार्थी केवल पुस्तकों में लिखे पाठों को याद करने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह अपने समय, समाज और परिस्थितियों को समझने वाला जागरूक नागरिक भी होता है। उसकी सोच में नए विचारों के बीज होते हैं और उसके संकल्प में आने वाले कल की संभावनाएँ छिपी होती हैं। इसी महत्त्व को रेखांकित करने के लिए प्रत्येक वर्ष 17 नवंबर को अन्तरराष्ट्रीय छात्र दिवस मनाया जाता है। यह दिवस विद्यार्थियों के संघर्ष, साहस, अधिकारों, स्वतंत्रता और शिक्षा के प्रति उनके समर्पण को स्मरण करने का अवसर प्रदान करता है।

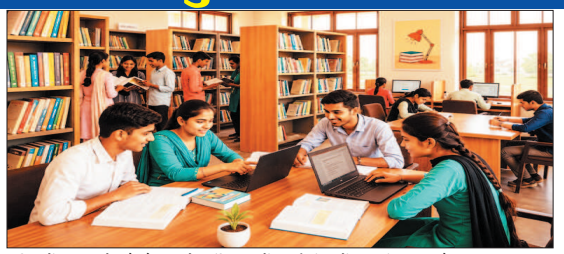

अन्तरराष्ट्रीय छात्र दिवस का इतिहास अत्यंत मार्मिक और प्रेरणादायक है। इसकी पृष्ठभूमि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यूरोप में घटित उन घटनाओं से जुड़ी है, जब जर्मनी के नाजी शासन ने चेकोस्लोवाकिया पर अधिकार कर लिया था। वर्ष 1939 में वहां के विद्यार्थी विदेशी शासन के विरोध में आवाज उठा रहे थे। 28 अक्टूबर को चेकोस्लोवाकिया की स्वतंत्रता की वर्षगांठ के अवसर पर हुए विरोध प्रदर्शनों के दौरान युवा श्रमिक वाक्लाव सेदलाचेक और चिकित्सा के विद्यार्थी जान ओप्लेताल घायल हुए। बाद में जान ओप्लेताल की मृत्यु हो गई। 15 नवंबर को उनके अंतिम संस्कार में बड़ी संख्या में विद्यार्थी शामिल हुए। यह शोक यात्रा धीरे-धीरे नाजी शासन के विरुद्ध विरोध प्रदर्शन में बदल गई।

विद्यार्थियों के इस साहस से भयभीत होकर नाजी शासन ने 17 नवंबर 1939 को कठोर दमनात्मक कार्रवाई की। प्राग और अन्य स्थानों के विद्यार्थी छात्रावासों तथा शिक्षण संस्थानों से गिरफ्तार किए गए। नौ विद्यार्थी नेताओं और शिक्षकों को बिना मुकदमे के मृत्युदंड दे दिया गया। एक हजार से अधिक विद्यार्थियों को यातना शिविरों में भेज दिया गया और कई विश्वविद्यालयों को बंद कर दिया गया। यह घटना केवल विद्यार्थियों पर किया गया अत्याचार नहीं थी, बल्कि विचारों की स्वतंत्रता, शिक्षा के अधिकार और मानवीय गरिमा पर किया गया आघात भी थी। इन बलिदानों की स्मृति में 1941 में लंदन में 17 नवंबर को अन्तरराष्ट्रीय छात्र दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की गई। तब से यह दिन दुनिया भर में विद्यार्थी एकता और स्वतंत्रता के संघर्ष का प्रतीक बन गया।

इस दिवस का महत्त्व केवल इतिहास को याद करने तक सीमित नहीं है। यह हमें बताता है कि विद्यार्थी समाज के मूक दर्शक नहीं होते। जब अन्याय बढ़ता है, जब अधिकारों का हनन होता है और जब लोकतांत्रिक मूल्यों पर संकट आता है, तब विद्यार्थियों की जागरूकता समाज को नई दिशा दे सकती है। इतिहास में अनेक ऐसे अवसर आए हैं, जब विद्यार्थियों ने अपने साहस और संगठन शक्ति से बड़े सामाजिक तथा राजनीतिक बदलावों का मार्ग प्रशस्त किया है। वर्ष 1973 में यूनान के विद्यार्थियों ने सैनिक शासन के विरुद्ध आवाज उठाई। वर्ष 1989 में प्राग में विद्यार्थियों के शांतिपूर्ण प्रदर्शन ने वहां लोकतांत्रिक परिवर्तन की प्रक्रिया को गति दी। इन घटनाओं से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी चेतना किसी भी दमनकारी व्यवस्था के सामने उम्मीद की किरण बन सकती है।

भारत के संदर्भ में विद्यार्थियों की भूमिका और भी व्यापक रही है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विद्यार्थियों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने विदेशी शासन के विरुद्ध संघर्ष किया। अनेक विद्यार्थियों ने पढ़ाई छोड़कर स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया, जेल गए और यातनाएँ सहीं। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांतिकारियों का जीवन युवाओं के साहस, देशप्रेम और त्याग की प्रेरक मिसाल है। उन्होंने यह सिद्ध किया कि उम्र छोटी हो सकती है, लेकिन विचार और संकल्प कभी छोटे नहीं होते।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी विद्यार्थियों की भूमिका समाप्त नहीं हुई। देश के निर्माण, वैज्ञानिक अनुसंधान, सामाजिक सुधार, लोकतांत्रिक चेतना और सांस्कृतिक विकास में विद्यार्थियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई है। भारत के अनेक वैज्ञानिक, चिकित्सक, शिक्षक, प्रशासक, साहित्यकार और समाजसेवी कभी विद्यार्थी ही थे। आज देश के विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत लाखों युवा भारत की भविष्य की दिशा तय कर रहे हैं। उनकी प्रतिभा और परिश्रम का उचित उपयोग देश को ज्ञान, विज्ञान और तकनीकी विकास के क्षेत्र में नई ऊंचाइयों तक पहुंचा सकता है।

हालांकि आज का विद्यार्थी अनेक चुनौतियों से भी जूझ रहा है। शिक्षा का बढ़ता खर्च, महंगी पुस्तकें, निजी शिक्षण संस्थानों की भारी फीस, प्रतियोगी परीक्षाओं का दबाव और रोजगार की अनिश्चितता उसके सामने गंभीर समस्याएं हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अनेक विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला और इंटरनेट जैसी सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के लिए उच्च शिक्षा प्राप्त करना अब भी आसान नहीं है। कई प्रतिभाशाली विद्यार्थी केवल आर्थिक अभाव के कारण अपनी पढ़ाई बीच में छोड़ने को विवश हो जाते हैं। यह स्थिति किसी भी संवेदनशील समाज के लिए चिंता का विषय होनी चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी प्राप्त करना नहीं होना चाहिए। शिक्षा व्यक्ति को विवेकशील, संवेदनशील, आत्मनिर्भर और जिम्मेदार बनाती है। वह सही और गलत के बीच अंतर करना सिखाती है। एक शिक्षित विद्यार्थी अपने अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्यों को भी समझता है। वह समाज में फैली कुरीतियों, अंधविश्वास, भेदभाव, जातिगत संकीर्णता और लैंगिक असमानता के विरुद्ध तार्किक दृष्टिकोण विकसित कर सकता है। इसलिए शिक्षा को केवल परीक्षा और अंकों तक सीमित कर देना उसके व्यापक उद्देश्य को कमजोर करना है।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के सामने एक नई चुनौती सामाजिक संचार माध्यमों और आभासी दुनिया का बढ़ता प्रभाव भी है। सूचना और ज्ञान के अनेक साधन उपलब्ध होने के बावजूद भ्रामक समाचार, अफवाहें, दिखावे की संस्कृति और अनावश्यक प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों की एकाग्रता को प्रभावित कर रही हैं। कई बार वे अपनी वास्तविक प्रतिभा और रुचि को पहचानने के बजाय दूसरों की उपलब्धियों से अपनी तुलना करने लगते हैं। ऐसे समय में उन्हें विवेकपूर्ण सोच, समय प्रबंधन और आत्मविश्वास की आवश्यकता है। तकनीक का उपयोग ज्ञान अर्जित करने, नए कौशल सीखने और रचनात्मकता विकसित करने के लिए होना चाहिए, न कि समय और ऊर्जा नष्ट करने के लिए।

विद्यार्थी जीवन अनुशासन, परिश्रम, धैर्य और निरंतर सीखने का समय है। इस अवस्था में विकसित आदतें व्यक्ति के पूरे जीवन को प्रभावित करती हैं। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे पाठ्य पुस्तकों के साथ साहित्य, इतिहास, विज्ञान और समसामयिक विषयों का भी अध्ययन करें। खेलकूद, कला, संगीत, सामाजिक सेवा और पर्यावरण संरक्षण जैसी गतिविधियों में भाग लें। इससे उनका व्यक्तित्व संतुलित और व्यापक बनेगा। उन्हें प्रश्न पूछने, तर्क करने और नए विचारों को स्वीकार करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। शिक्षक और अभिभावक भी विद्यार्थियों पर केवल अच्छे अंक लाने का दबाव डालने के बजाय उनकी रुचियों, क्षमताओं और मानसिक आवश्यकताओं को समझें।

शिक्षा व्यवस्था की भी यह जिम्मेदारी है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी को समान अवसर प्रदान करे। आर्थिक स्थिति, जाति, भाषा, क्षेत्र और सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर किसी प्रतिभा को आगे बढ़ने से रोका नहीं जाना चाहिए। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में ऐसा वातावरण होना चाहिए, जहां विद्यार्थी बिना भय के अपने विचार रख सकें। शिक्षण संस्थान केवल प्रमाणपत्र देने के केंद्र न बनें, बल्कि स्वतंत्र चिंतन, अनुसंधान, नवाचार और मानवीय मूल्यों के विकास के केंद्र बनें। शिक्षकों को भी विद्यार्थियों के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

अन्तरराष्ट्रीय छात्र दिवस हमें यह संदेश देता है कि विद्यार्थी केवल अपने परिवार का भविष्य नहीं, बल्कि राष्ट्र और मानवता की आशा भी हैं। उनकी आवाज में समाज को बदलने की शक्ति है और उनके विचारों में नई सभ्यता के निर्माण की संभावना है। लेकिन इस शक्ति का सकारात्मक उपयोग तभी संभव है, जब विद्यार्थी ज्ञान के साथ विवेक, अधिकारों के साथ जिम्मेदारी और महत्वाकांक्षा के साथ संवेदनशीलता को भी अपनाएं।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हम विद्यार्थियों को केवल भविष्य का नागरिक न मानें, बल्कि वर्तमान का सक्रिय और जिम्मेदार भागीदार भी समझें। उनकी समस्याओं को सुनें, उनकी प्रतिभा को अवसर दें और उनके प्रश्नों का सम्मान करें। किसी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति उसके भवनों, सड़कों और आर्थिक आंकड़ों से ही नहीं, बल्कि उसकी युवा पीढ़ी की शिक्षा, सोच और चरित्र से भी मापी जाती है। 17 नवंबर का यह दिवस हमें याद दिलाता है कि शिक्षा का दीपक कभी बुझना नहीं चाहिए और स्वतंत्र विचारों की आवाज कभी दबनी नहीं चाहिए। क्योंकि आज का जागरूक विद्यार्थी ही कल के सशक्त, समतामूलक और प्रगतिशील समाज का निर्माता है।

कहानी : सतयुगी चाचा और अकेला बंगला

राजकुमार धर द्विवेदी, वरिष्ठ पत्रकार रायपुर





गांव के बाहर, शहर की तरफ एक बहुत बड़ा बंगला था। इतना बड़ा कि उसमें पूरा गांव समा जाए। उस बंगले में रहते थे- रिटायर्ड अफसर श्रीकांत जी। कभी वे बड़े नामी अफसर थे। बड़े-बड़े लोग उनसे मिलने आते थे। तीन बेटे, तीनों बड़े अफसर। नाती-पोते, सब कुछ था। लेकिन अब पत्नी नहीं रहीं। बेटे अपने-अपने शहर में। बंगले में सिर्फ श्रीकांत जी, एक नौकर और चार दीवारें। सुबह चाय खुद बनाते, दोपहर को अकेले खाना खाते, शाम को बरामदे में अकेले बैठते।

एक दिन उन्होंने डायरी में लिखा, बुढ़ापे की इस अकेली जीवन यात्रा में मेरे साथ मेरे विचार, मेरे निर्णय और मेरा स्वाभिमान साथ हैं। ये बात गांव तक पहुंची। सतयुगी चाचा ने सुना तो खटिया से उठकर बोले, दाऊ, आदमी इतना बड़ा हो गया कि उसके पास साथ बैठने वाला कोई नहीं बचा? चलो, आज खटिया बंगले तक जाएगी। चाचा पहुंचे बंगले पर। चाचा अपनी खटिया लेकर बंगले के गेट पर पहुंचे। दरबान बोला, कौन हो बाबा? साहब किसी से नहीं मिलते। चाचा बोले, बेटा, साहब किसी से नहीं मिलते, इसलिए तो मैं आया हूं। जाकर कह दे, गांव से चाचा आया है खटिया लेकर।

श्रीकांत जी बाहर आए। सफेद कुर्ता, चश्मा, चेहरे पर थकान। बोले, कहिए, क्या काम है? चाचा बोले, काम नहीं, चाय पीने आया हूं। सुना है, आपके बंगले में चाय पीने वाला कोई नहीं है। श्रीकांत जी थोड़ा मुस्करा कर बोले, आइए, बैठिए। चाचा बंगले के महंगे सोफे पर नहीं बैठे। उन्होंने बरामदे में अपनी खटिया बिछा दी और बोले, साहब, इस पर बैठिए। इस पर बैठकर आदमी बड़ा नहीं, अपना लगता है। श्रीकांत जी खटिया पर बैठे। सालों बाद किसी ने उनसे ऐसे बात की थी, जैसे वे साहब नहीं, आदमी हों। चाचा बोले, साहब, आपने जीवन में सब कुछ पाया। देश के लिए काम किया, बच्चों को अफसर बनाया, लेकिन एक चीज भूल गए।

क्या? आपने अपने लिए लोग नहीं बनाए। आपने सिर्फ कुटुंब बनाया, समाज नहीं बनाया। कुटुंब तो नौकरी के साथ उड़ जाता है, समाज यहीं रहता है। श्रीकांत जी की आंखें भर आईं। बोले, चाचा, अब क्या करूं? उम्र हो गई। अब कौन आएगा मेरे पास? चाचा हंसे, साहब, उम्र से लोग नहीं जुड़ते, दिल से जुड़ते हैं। आप आईएएस रहे हैं ना? तो कल से गांव के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाइए।

मैं? बच्चों को? हां। गांव में 20 बच्चे हैं, जो अंग्रेजी के लिए तरसते हैं। आप एक घंटा दीजिए। देखिए, आपका बंगला कैसे भर जाएगा। अगले दिन से कमाल हुआ। सुबह 8 बजे श्रीकांत जी के बंगले पर बच्चे आने लगे। कभी 10, कभी 20, कभी 30। श्रीकांत जी उन्हें अंग्रेजी, दुनिया की बातें, अनुशासन सिखाते।

एक दिन एक बच्चा बोला, साहब, आप तो बहुत अच्छा पढ़ाते हैं! श्रीकांत जी बोले, बेटा, साहब मत कहो, दादा कहो। फिर क्या था, कोई दादा कहने लगा, कोई बाबूजी। एक बूढ़ी अम्मा बोली, साहब, आप हमारे बच्चों को पढ़ाते हैं तो हम आपके लिए खाना लाएंगे। कोई दूध ले आया, कोई सब्जी ले आया, कोई चाय ले आया। श्रीकांत जी ने चाचा से कहा, चाचा, मेरा बंगला अब बंगला नहीं लगता, घर लगता है। चाचा बोले, साहब, पहले आपके पास पैसा था, पद था, स्वाभिमान था। अब आपके पास लोग हैं। और दाऊ, लोग ही असली दौलत हैं।

एक शाम श्रीकांत जी ने अपनी डायरी में फिर लिखा। इस बार लिखा, बुढ़ापे की इस जीवन यात्रा में अब मैं अकेला नहीं हूं। मेरे साथ मेरे विचार भी हैं, मेरा स्वाभिमान भी है और गांव के बच्चे भी हैं। चाचा ने पढ़कर कहा, देखा दाऊ! बंगला बड़ा होने से आदमी बड़ा नहीं होता। आदमी तब बड़ा होता है, जब उसका आंगन लोगों से भर जाए, पैसा बंगला बना देता है, लेकिन प्यार घर बना देता है! और उस दिन से उस बड़े बंगले के बाहर एक छोटी-सी खटिया हमेशा बिछी रहती है, जिस पर लिखा है, यहां साहब नहीं, दादा बैठते हैं।

महंगाई और आम आदमी की घटती क्रयशक्ति

अवनीश कुमार गुप्ता

महंगाई का प्रश्न केवल बाजार में वस्तुओं की बढ़ती कीमतों का प्रश्न नहीं है; यह आम आदमी की थाली, परिवार की बचत और भविष्य के सपनों से जुड़ा हुआ प्रश्न है। जब आय की गति धीमी पड़ जाती है और खर्चों की रफ्तार तेज हो जाती है, तब आर्थिक संतुलन डगमगाने लगता है। वेतन वही रहता है, लेकिन महीने का बजट छोटा पड़ने लगता है। रसोई से लेकर विद्यालय, अस्पताल से लेकर परिवहन तक हर जगह बढ़ती लागत का दबाव दिखाई देता है। आर्थिक विकास की सार्थकता तभी है, जब उसका लाभ नागरिकों की क्रयशक्ति में दिखाई दे। यदि बाजार समृद्ध होता जाए और परिवार की जेब खाली होती जाए, तो विकास के दावों की सामाजिक कसौटी पर समीक्षा अनिवार्य हो जाती है।

महंगाई का पहला और सबसे प्रत्यक्ष कारण मांग तथा आपूर्ति के बीच असंतुलन है। किसी वस्तु की मांग बढ़े और उसकी उपलब्धता पर्याप्त न हो, तो कीमतों पर दबाव पड़ना स्वाभाविक है। खाद्य पदार्थों के मामले में यह असंतुलन मौसम, कृषि उत्पादन और वितरण व्यवस्था से प्रभावित होता है। अनियमित मानसून, सूखा, बाढ़, अत्यधिक तापमान और फसल रोग उत्पादन को नुकसान पहुँचाते हैं। परिणामस्वरूप सब्जियों, दालों और अनाज की उपलब्धता घटती है तथा उपभोक्ता को अधिक कीमत चुकानी पड़ती है। इस चुनौती का समाधान केवल बाजार में हस्तक्षेप करने से नहीं होगा। कृषि को मौसम की अनिश्चितताओं के अनुकूल बनाना होगा। सिंचाई, जल संरक्षण, उन्नत बीज, फसल बीमा, मौसम आधारित सलाह और फसल विविधीकरण को प्राथमिकता देनी होगी। खेत में उत्पादन की स्थिरता ही बाजार में कीमतों की स्थिरता का पहला आधार है।

कृषि संकट का दूसरा पहलू उत्पादन के बाद शुरू होता है। किसान खेत में उपज पैदा करता है, लेकिन उसे सुरक्षित रखने, बाजार तक पहुँचाने और उचित मूल्य प्राप्त करने की व्यवस्था अक्सर कमजोर रहती है। भंडारण की कमी, शीतगृहों का अभाव, खराब सड़कें और परिवहन की अधिक लागत उपज को महँगा बना देती हैं। कई बार किसान कम कीमत पर फसल बेचता है, जबकि उपभोक्ता उसी वस्तु के लिए अधिक भुगतान करता है। यह विरोधाभास बताता है कि समस्या केवल उत्पादन की नहीं, बल्कि पूरी कृषि विपणन व्यवस्था की है। ग्रामीण गोदामों, शीतगृहों, खाद्य प्रसंस्करण केंद्रों और बेहतर परिवहन नेटवर्क का विस्तार आवश्यक है। किसान उत्पादक संगठनों को मजबूत करके, मंडियों में पारदर्शी नीलामी और डिजिटल बाजार व्यवस्था विकसित करके किसान तथा उपभोक्ता के बीच अनावश्यक लागत घटाई जा सकती है। खेत से बाजार तक की दूरी जितनी कम और व्यवस्था जितनी पारदर्शी होगी, कीमतों पर दबाव उतना ही घटेगा।

महंगाई की आग को ऊर्जा और परिवहन लागत भी हवा देती है। पेट्रोलियम उत्पाद महँगे होते हैं तो उसका प्रभाव केवल वाहन चालकों पर नहीं पड़ता। माल ढुलाई, कृषि मशीनरी, औद्योगिक उत्पादन और सार्वजनिक परिवहन की लागत भी बढ़ती है। अंततः यह अतिरिक्त बोझ वस्तुओं की कीमतों में शामिल होकर उपभोक्ता तक पहुँचता है। इसलिए ईंधन की कीमतों को केवल पेट्रोल पंप के मूल्य से नहीं, बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था पर पड़ने वाले प्रभाव से समझना चाहिए। रेलवे और जलमार्ग आधारित माल ढुलाई का विस्तार, सार्वजनिक परिवहन का सुदृढ़ीकरण, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन तथा नवीकरणीय ऊर्जा में निवेश इस समस्या के दीर्घकालिक समाधान हैं। ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों का विकास केवल पर्यावरण संरक्षण नहीं, बल्कि आर्थिक सुरक्षा का भी उपाय है। ईंधन पर कर संबंधी नीतियों में भी ऐसा संतुलन होना चाहिए जिससे सरकारी राजस्व और उपभोक्ता हितों के बीच सामंजस्य बना रहे।

मूल्य स्थिरता बनाए रखने में भारतीय रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति की महत्वपूर्ण भूमिका है। ब्याज दरों में बदलाव के माध्यम से ऋण की मांग और बाजार में उपलब्ध धनराशि को प्रभावित किया जाता है। मांग आधारित महंगाई बढ़ने पर ब्याज दरों में वृद्धि करके अत्यधिक मांग को नियंत्रित करने का प्रयास किया जा सकता है। लेकिन यदि कीमतें खाद्य पदार्थों की कमी, खराब मौसम या वितरण व्यवस्था की बाधाओं के कारण बढ़ रही हों, तो केवल ब्याज दर बढ़ाना पर्याप्त नहीं होगा। इससे ऋण महँगा होकर उद्योगों, कारोबारियों और उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त बोझ डाल सकता है। इसलिए मौद्रिक नीति के साथ आपूर्ति व्यवस्था में सुधार भी जरूरी है। सरकार को उत्पादन और वितरण की बाधाएँ दूर करनी चाहिए, जबकि केंद्रीय बैंक को मूल्य स्थिरता और आर्थिक गतिविधियों के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए।

सरकार की जिम्मेदारी बाजार में आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के साथ जमाखोरी, कालाबाजारी और कृत्रिम कमी पर अंकुश लगाने की भी है। बाजार की निगरानी केवल कीमतें बढ़ जाने के बाद नहीं, बल्कि संभावित संकट के संकेत मिलते ही शुरू होनी चाहिए। आवश्यक वस्तुओं के भंडार, उत्पादन और बाजार भाव से संबंधित सूचनाएँ समय पर सार्वजनिक की जाएँ। इससे अफवाहों और अनावश्यक खरीदारी पर नियंत्रण रखने में मदद मिलेगी। सार्वजनिक वितरण प्रणाली को पारदर्शी और प्रभावी बनाकर पात्र परिवारों तक खाद्यान्न की नियमित उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए। हालांकि, राहत योजनाएँ स्थायी समाधान का विकल्प नहीं हो सकतीं। किसानों को उचित मूल्य और उपभोक्ताओं को सस्ती वस्तुएँ उपलब्ध कराने के बीच संतुलन बनाने के लिए उत्पादन लागत, वितरण व्यय और बाजार की वास्तविक स्थिति का समग्र आकलन आवश्यक है।

इस पूरी प्रक्रिया में राज्य सरकारों और स्थानीय प्रशासन की भूमिका निर्णायक है। कृषि मंडियों का प्रबंधन, स्थानीय परिवहन, बाजार निगरानी और आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने में राज्य सरकारें महत्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं। जिला प्रशासन को बाजारों में कीमतों और आपूर्ति की नियमित जानकारी रखनी चाहिए। जिस क्षेत्र में किसी वस्तु की कमी हो, वहाँ दूसरे क्षेत्रों से समय पर आपूर्ति की व्यवस्था की जा सकती है। केंद्र और राज्यों के बीच बेहतर समन्वय से स्थानीय स्तर पर उत्पन्न संकट को व्यापक मूल्यवृद्धि में बदलने से रोका जा सकता है। नीति की सफलता केवल उसके निर्माण से नहीं, बल्कि जमीन पर उसके प्रभावी क्रियान्वयन से तय होती है।

महंगाई का सबसे कठोर प्रहार उन वर्गों पर पड़ता है जिनकी आय सीमित और अनिश्चित है। दैनिक मजदूर, छोटे किसान, असंगठित क्षेत्र के कर्मचारी, पेंशनभोगी और निम्न आय वाले परिवार अपनी कमाई का बड़ा हिस्सा बुनियादी जरूरतों पर खर्च करते हैं। उनके लिए खाद्य पदार्थों की कीमतों में थोड़ी वृद्धि भी घरेलू संतुलन बिगाड़ सकती है। मध्यम वर्ग की स्थिति भी कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। शिक्षा, किराया, दवाइयाँ, स्वास्थ्य सेवाएँ और परिवहन जैसे खर्च बचत की गुंजाइश घटाते हैं। इसलिए महंगाई का मूल्यांकन केवल औसत मूल्य सूचकांक से नहीं होना चाहिए। यह देखना भी जरूरी है कि विभिन्न आय वर्गों की वास्तविक क्रयशक्ति कितनी प्रभावित हुई है। सार्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करना तथा सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ जरूरतमंदों तक पहुँचाना इस दबाव को कम कर सकता है।

यह मानना उचित नहीं होगा कि महंगाई का समाधान केवल नागरिकों को खर्च घटाने की सलाह देने से निकल आएगा। परिवार अपने बजट का प्रबंधन कर सकते हैं, लेकिन जब भोजन, ईंधन, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी अनिवार्य जरूरतें महँगी हो जाएँ, तब व्यक्तिगत प्रयासों की सीमा सामने आ जाती है। उपभोक्ता जागरूकता और वित्तीय साक्षरता उपयोगी हैं, पर वे कमजोर उत्पादन व्यवस्था, अपर्याप्त भंडारण और महँगी आपूर्ति श्रृंखला का विकल्प नहीं बन सकतीं। इसके लिए सरकार को दीर्घकालिक सुधारों, उद्योगों को प्रोत्साहन, कृषि निवेश और बाजार की जवाबदेही पर एक साथ काम करना होगा।

अर्थव्यवस्था की वास्तविक मजबूती का पता केवल विकास दर, निवेश और उत्पादन के आँकड़ों से नहीं चलता। उसकी असली परीक्षा तब होती है, जब आम परिवार अपनी आवश्यकताओं को बिना कर्ज और असहनीय कटौती के पूरा कर सके। महंगाई पर नियंत्रण के लिए कृषि उत्पादन बढ़ाना, भंडारण सुधारना, परिवहन लागत घटाना, रोजगार सृजित करना और बाजार में पारदर्शिता सुनिश्चित करना एक साझा रणनीति के हिस्से होने चाहिए। तात्कालिक राहत के साथ संरचनात्मक सुधारों को प्राथमिकता देनी होगी। आखिरकार, विकास का अर्थ केवल बाजार का विस्तार नहीं, बल्कि नागरिकों के जीवन में स्थिरता और सम्मान का विस्तार भी है। आम आदमी की थाली सुरक्षित होगी, परिवार की बचत बनी रहेगी और आय के अनुरूप खर्च संभव होगा, तभी आर्थिक प्रगति का दावा वास्तविक अर्थों में सार्थक माना जाएगा।



कॉस्मेटिक बदलावों के बारे में झूठ बोलना व्यर्थ होगा: श्रुति हासन

बॉलीवुड अभिनेत्री श्रुति हासन ने कॉस्मेटिक सर्जरी और शराब के सेवन जैसे संवेदनशील विषयों पर अपनी बेबाक राय साझा की। कॉस्मेटिक सर्जरी को लेकर श्रुति का मानना है कि हर व्यक्ति को अपने शरीर को लेकर फैसले लेने का पूरा अधिकार है, लेकिन इन फैसलों को छिपाना या उनके बारे में असत्य बोलना उन्हें अनुचित लगता है।

अभिनेत्री ने कहा कि वे एक सार्वजनिक हस्ती के रूप में लोगों के सामने बड़ी हुई हैं, ऐसे में कॉस्मेटिक बदलावों के बारे में झूठ बोलना व्यर्थ होगा। उन्होंने कुछ लोगों के रवैये पर टिप्पणी करते हुए कहा कि, मैं किसी को जज नहीं कर रही हूं, लेकिन कुछ लोग कहते हैं- मैं तो ऐसी ही पैदा हुई थी-जबकि तीन हफ्ते पहले तो आप ऐसे नहीं दिखते थे। श्रुति हासन ने स्पष्ट किया कि उन्हें किसी के व्यक्तिगत चुनाव से आपत्ति नहीं है, बल्कि उस चुनाव को स्वीकार न करने या उस पर पर्दा डालने की प्रवृत्ति से है। उन्होंने यह भी कहा कि वे इन चीजों को बढ़ावा नहीं देना चाहतीं, बल्कि केवल सच्चाई सामने रखने की बात करती हैं।

अपनी जिंदगी के एक और निजी पहलू पर बात करते हुए श्रुति ने शराब के साथ अपने रिश्ते और उससे दूरी बनाने के अनुभव को साझा किया। उन्होंने बताया कि वे लगातार आठ साल तक शराब से पूरी तरह दूर रही थीं, इस दौरान उन्होंने एक बूंद भी शराब का सेवन नहीं किया। हालांकि, इसके बाद उन्होंने दोबारा शराब पीना शुरू कर दिया है, लेकिन अब वे इसे लेकर बहुत सावधान रहती हैं। उन्होंने हमेशा यह खुलकर स्वीकार किया है कि शराब उनके लिए अच्छी नहीं रही है। फिलहाल वे इसे संभालने और नियंत्रित करने के प्रयास में हैं, ताकि यह उनके जीवन पर नकारात्मक प्रभाव न डाले। श्रुति हासन भारतीय सिनेमा के दिग्गज अभिनेता कमल हासन और अभिनेत्री सारिका ठाकुर की पुत्री हैं। उन्होंने हिंदी के साथ-साथ तमिल और तेलुगु फिल्म उद्योगों में भी अपनी पहचान बनाई है।



16 साल की उम्र में ही दीपिका पादुकोण ने तय कर लिया था अभिनेत्री बनना

हाल ही में बॉलीवुड अभिनेत्री दीपिका पादुकोण ने अपने अभिनय करियर की शुरुआत और अपने शुरुआती सपनों के बारे में बताया है। आज दीपिका पादुकोण को बॉलीवुड की सबसे भरोसेमंद और सफल अभिनेत्रियों में से एक माना जाता है। उन्होंने खुलासा किया कि महज 16 साल की उम्र में ही उन्हें यह स्पष्ट हो गया था कि वे एक अभिनेत्री बनना चाहती हैं। उन्होंने हॉलीवुड में भी अपनी पहचान बनाई है, फिल्म ट्रिपल एक्स - द रिटर्न ऑफ जेंडर केज से हॉलीवुड में कदम रखने के बाद, वे लोकप्रिय द एलेन डीजेनेरेस शो में भी बतौर मेहमान शामिल हुई थीं। एक बातचीत के दौरान अभिनेत्री ने अपने पिता प्रकाश पादुकोण के बैडमिंटन करियर के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि उनके पिता ने भारत में ऐसे समय में बैडमिंटन खेला, जब प्रोफेशनल तौर पर खेल को करियर के रूप में देखना आम बात नहीं थी। उस समय अधिकतर लोग डॉक्टर या वकील बनने का सपना देखते थे, लेकिन उनके पिता ने एक खिलाड़ी के तौर पर अपनी पहचान बनाई। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्होंने कभी अपने पिता के नक्शेकदम पर चलने की इच्छा जताई थी, तो दीपिका ने जवाब दिया कि वे ऐसा करके अपने पिता को खुश कर सकती थीं, लेकिन उनके पिता ने हमेशा यही सीख दी कि अपने दिल की सुनो। अभिनय के प्रति अपने गहरे प्रेम को व्यक्त करते हुए दीपिका ने दोहराया कि 16 साल की कम उम्र में ही उन्हें यह निश्चित रूप से पता चल गया था कि वे एक अभिनेत्री बनना चाहती हैं। उन्होंने कहा कि कैमरे के सामने रहना उन्हें असीम खुशी और संतोष देता है। दीपिका ने एलेन को एक प्रेरक घटना भी बताई। उन्होंने कहा कि एक बार उन्होंने अपना पोर्टफोलियो शूट करवाने के लिए अपनी मां से 10,000 रुपए उधार लिए थे। पैसे मांगते समय, युवा दीपिका ने अपनी मां को पूरा भरोसा दिलाया था कि वे न केवल उनके पैसे लौटा देंगी, बल्कि एक दिन उन्हें गौरवान्वित भी करेंगी। यह घटना उनके दृढ़ निश्चय और अपनी कला के प्रति समर्पण को दर्शाती है। साल 2007 में शाहरुख खान के साथ फिल्म ओम शांति ओम से अपने शानदार करियर की शुरुआत करने के बाद, दीपिका ने भारतीय सिनेमा को कई ब्लॉकबस्टर फिल्में दी हैं। उनकी प्रमुख फिल्मों में ये जवानी है दीवानी (2013), चेन्नई एक्सप्रेस (2013), गोलियों की रासलीला राम-लीला (2013), पीकू (2015), बाजीराव मस्तानी (2015), पद्मावत (2018), छपाक (2020), पठान (2023), जवान (2023) और आने वाली बहुप्रतीक्षित फिल्म कल्कि 2898 एडी (2024) शामिल हैं।

साई पल्लवी पुलिस अफसर बनने के लिए बदला लुक

● छोटे बाल करवाने पर माता-पिता ने दी प्रतिक्रिया

5 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली रामायण में सीता के किरदार के बाद, अभिनेत्री साई पल्लवी अपनी आगामी फिल्म ओम-चैप्टर 1 अधिरम- द लॉस्ट वुड में एक बिल्कुल ही अलग अवतार में दर्शकों के सामने होंगी। इस फिल्म में वह एक तेजतर्रार आईपीएस अधिकारी की भूमिका निभा रही हैं, जिसे लाल चंदन की अवैध तस्करी की जांच का जिम्मा सौंपा गया है। इस चुनौती भरे किरदार के लिए साई ने एक बड़ा कदम उठाया है उन्होंने अपने बाल छोटे करवा लिए हैं। उनके इस नए लुक को देखकर उनके माता-पिता भी हैरान रह गए, जिस पर अब अभिनेत्री ने खुलकर बात की है।

एक इंटरव्यू में साई पल्लवी ने अपने बाल कटवाने के पीछे की वजह बताई। उन्होंने कहा, मैंने अपने बाल कटवाए क्योंकि कहानी सुनने और अपने किरदार को समझने के बाद मुझे लगा कि यह आवश्यक है। मुझे स्क्रिप्ट इतनी पसंद आई कि मैं इस बदलाव के लिए तैयार हो गई। उन्होंने बताया कि बाल कटवाने के बाद जब उन्होंने वीडियो कॉल पर अपनी मां को नया लुक दिखाया, तो वह हैरान रह गईं और ढेर सारे सवाल पूछने लगीं। मां ने तो कॉल भी काट दिया। बाद में उनके पिता ने फोन करके पूछा कि क्या उन्होंने विग पहनी है। साई ने उन्हें समझाया कि यह पूरी तरह से उनके किरदार की मांग थी, और उन्हें उनके नए हेयरस्टाइल के साथ सहज होने में कुछ समय लगा।



निर्देशक राजकुमार पेरियासामी ने इस निर्णय का समर्थन करते हुए कहा कि इस किरदार के लिए यह लुक एकदम सही था। उन्होंने साई के समर्पण की सराहना की, फिल्म में हम अक्सर मुख्य किरदार की जरूरत के हिसाब से कुछ बदलाव करते हैं, और साई पल्लवी ने भी इस रोल के लिए अपने बाल कटवाकर एक बड़ा त्याग किया। कहानी के प्रति उनके लगाव ने ही इस बदलाव को मुमकिन बनाया। साई ने भी राजकुमार पर अपने भरोसे और स्क्रिप्ट की मांग के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने बताया कि शूटिंग के दौरान उन्होंने अपने बालों को स्कार्फ से ढक कर रखा था ताकि फिल्म की रिलीज से पहले उनका यह लुक लीक न हो जाए। यह साई और राजकुमार की दूसरी फिल्म है, इससे पहले उनकी पहली फिल्म अमरन एक बड़ी हिट रही थी, जिसके लिए राजकुमार को बेस्ट डायरेक्टर का नेशनल अवॉर्ड भी मिला था।

दानानीर मोबीन की तो निकल पड़ी

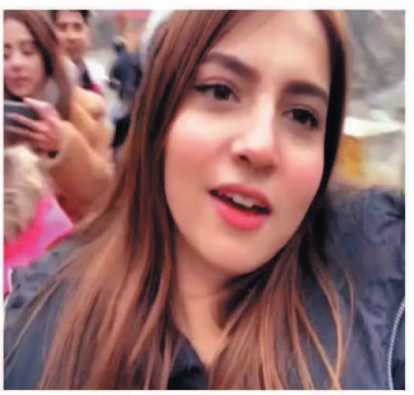

इंटरनेट पर पार्टी हो रही है वाले वायरल वीडियो से रातोंरात सुर्खियां बटोर कर फिल्मी दुनियां में धमाल करने वाली दानानीर मोबीन ने अब बड़ी अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि भी हासिल कर ली है। दरअसल पाकिस्तान की सोशल मीडिया स्टार-अभिनेत्री ने मॉस्को में आयोजित दूसरे ओपन यूरेशियन फिल्म अवार्ड्स में सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री का डायमंड बटरफ्लाई अवॉर्ड जीतकर सभी को हैरान कर दिया है। इस बड़ी कामयाबी के लिए न सिर्फ उनके घर-परिवार व करीबी बल्कि पाकिस्तानी और हिंदुस्तानी प्रशंसक भी खासे खुश नजर आए हैं। दानानीर को यह सम्मान उनकी फिल्म मेरा लियारी में शानदार अभिनय के लिए मिला है। इस फिल्म में उन्होंने करांची के एक पिछड़े और बदनाम इलाके की उस मजबूत इरादों वाली लड़की का किरदार निभाया है, जो फुटबॉल खिलाड़ी बनने के अपने सपने को पूरा करने के लिए सामाजिक बाधाओं और दबावों से डटकर मुकाबला करती है।



दिल्ली क्राइम सीजन 3 शो मेरे दिल के बेहद करीब: रसिका दुग्गल

वेब सीरीज दिल्ली क्राइम सीजन 3 ने अपनी रिलीज का एक साल पूरा कर लिया है। इस खास मौके पर अपनी भावना व्यक्त करते हुए अभिनेत्री रसिका दुग्गल कहा कि यह शो उनके दिल के बेहद करीब है। दिल्ली क्राइम के माध्यम से उन्हें यह जानने का अवसर मिला कि हमारी असल जिंदगी से जुड़ी कहानियां किस प्रकार वैश्विक स्तर पर दर्शकों के साथ जुड़ सकती हैं।

शो को मिले अपार प्यार और सम्मान, जिसमें प्रतिष्ठित इंटरनेशनल एमी अवॉर्ड भी शामिल है, ने उन्हें बहुत हौसला दिया है। उन्होंने तीनों सीजन का हिस्सा बनने और अपने किरदार, पुलिस अधिकारी नीति सिंह को हर सीजन में विकसित होते देखने पर संतोष व्यक्त किया। रसिका ने नीति सिंह के सफर में आए कठिन और पेचीदा मामलों के साथ-साथ उनके निजी जीवन के संघर्षों और भावनात्मक ट्रॉमा को भी खूबसूरती से दर्शाया। उन्होंने पूरी टीम के साथ काम करने के अनुभव को भी बहुत खास बताया और भविष्य में भी उनके साथ काम करने की इच्छा जताई, यह दर्शाता है कि यह सीरीज उनके लिए सिर्फ एक प्रोजेक्ट नहीं बल्कि एक भावनात्मक जुड़ाव है।

वेब सीरीज दिल्ली क्राइम सीजन 3 में रसिका दुग्गल ने एक सशक्त पुलिस अधिकारी नीति सिंह की भूमिका निभाई थी। यह सीजन मुख्य रूप से मानव तस्करी और विशेष रूप से महिलाओं व बच्चों की तस्करी से जुड़े एक बड़े और खतरनाक रैकेट पर केंद्रित था। कहानी की शुरुआत असम में एक ट्रक और उससे जुड़े मामलों की गहन छानबीन से होती है, जो बाद में दिल्ली और देश के कई अन्य हिस्सों से जुड़े एक व्यापक आपराधिक नेटवर्क का पर्दाफाश करती है। इसमें खतरनाक विलेन बड़ी दीदी का किरदार निभाने वाली हुमा कुरैशी के अभिनय को भी काफी सराहा गया था। यह सीरीज अपनी भावनात्मक गहराई, पुलिसिया जांच की बारीकियों और सस्पेंस थ्रिलर के रूप में दर्शकों को बांधे रखने में सफल रही है। इसका निर्देशन तनुज चोपड़ा ने किया है।

रणबीर, साई पल्लवी और यश का चला जादू

रणबीर कपूर, साई पल्लवी और यश अभिनीत रामायण पार्ट-1 बॉक्स ऑफिस पर लगातार मजबूत प्रदर्शन कर रही है। 5 नवंबर को रिलीज हुई इस फिल्म ने दूसरे रविवार को करीब 75 करोड़ रुपए की कमाई की, जो बॉलीवुड फिल्मों के लिए दूसरे रविवार की सबसे बड़ी कमाई में शामिल हो गई है। फिल्म की कुल घरेलू नेट कमाई 760 करोड़ रुपए के पार पहुंचने की खबर है। फिल्म को शुरुआती दौर में दर्शकों की मिश्रित प्रतिक्रियाएं मिली थीं। समीक्षकों के एक वर्ग ने इसके भव्य दृश्यांकन, तकनीकी गुणवत्ता और बड़े पैमाने पर तैयार किए गए संसार की सराहना की, जबकि कहानी और चरित्रों की गहराई को लेकर सवाल उठे। पर देखते ही देखते फिल्मी कलाकारों के किरदार और कला का जादू चल ही गया। बड़ी स्टारकास्ट, भारतीय पौराणिक कथा और अत्याधुनिक तकनीक का मेल फिल्म की व्यावसायिक ताकत बना हुआ है।



स्टूडेंट ऑफ द ईयर: आफ्टर डार्क में शनाया को मिला क्षमता को परखने का मौका

अपनी डेब्यू वेब सीरीज स्टूडेंट ऑफ द ईयर: आफ्टर डार्क में अभिनेत्री शनाया कपूर ने करियर की शुरुआत में ही डबल रोल निभाने की गहन चुनौतियों पर खुलकर बात की है। अभिनेत्री ने सोशल मीडिया के माध्यम से फिल्म निर्माता करण जौहर का विशेष रूप से धन्यवाद किया, जिन्होंने उन्हें इतनी प्रतिष्ठित फ्रेंचाइजी में दोहरी भूमिका निभाने का मौका दिया।

शनाया ने बताया कि इस महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट ने उन्हें अपनी अभिनय क्षमताओं को गहराई से परखने का अवसर प्रदान किया, हालांकि शूटिंग के दौरान उन्हें कई मुश्किल और अप्रत्याशित चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। शनाया का मानना है कि इस अवसर ने उन्हें एक अभिनेत्री के तौर पर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का महत्वपूर्ण मंच दिया। उन्होंने निर्देशक रीमा सेन का भी आभार व्यक्त किया, जिन्होंने उन्हें रचनात्मक सुझाव साझा करने और अपने किरदार को गढ़ने की पूरी स्वतंत्रता दी। शनाया ने उन मुश्किल एक्शन दृश्यों और पानी के भीतर फिल्माए गए सीन्स के बारे में भी बताया, जिन्हें करना उनकी सोच से कहीं ज्यादा चुनौतीपूर्ण था।

उन्होंने इन मुश्किल पलों में मार्गदर्शन और निरंतर सहयोग देने के लिए एक्शन टीम और अंडरवॉटर टीम का हार्दिक धन्यवाद किया। अभिनेत्री ने स्वीकार किया कि शूटिंग के दौरान कुछ दिन शारीरिक और मानसिक रूप से बेहद कठिन थे, लेकिन उनके आसपास मौजूद लोगों के अटूट भरोसे और समर्थन ने ही उन्हें इन चुनौतियों से पार पाने में मदद की। सेट से कुछ बिहाइंड-द-सीन्स तस्वीरें साझा करते हुए शनाया कपूर ने लिखा कि यह शो उनके लिए सब कुछ है, और यह पूरी शानदार, बेहतरीन और कमाल की टीम के बिना मुमकिन नहीं हो पाता। उन्होंने करण जौहर को धन्यवाद देते हुए कहा कि उन्हें इतनी खास फ्रेंचाइजी को आगे बढ़ाने का मौका मिला और करियर की शुरुआत में ही डबल रोल से अपनी रेंज दिखाने का अवसर मिला। शनाया ने विश्वास जताया कि वे उन्हें गौरवान्वित कर पाएंगी। उन्होंने एक्शन डायरेक्टर बंटी सर से लेकर सुकेश सर के नेतृत्व वाली टीम तक सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद किया।

उन्होंने कहा, आप सभी ने मुझे उन सीमाओं से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, जहां तक पहुंचने के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। कुछ दिन बहुत मुश्किल थे, और अगर आप लोगों को मुझ पर भरोसा न होता, तो मैं इनमें से कुछ भी नहीं कर पाती। सबसे चुनौतीपूर्ण अंडरवॉटर शॉट्स के दौरान आपने मेरा हाथ थामे रखा। धन्यवाद। उन्होंने पूरी क्रू टीम का भी धन्यवाद किया और बताया कि इस सीरीज की शूटिंग करना काफी चुनौतीपूर्ण था, और हर दिन, हर मिनट और हर सेकंड बहुत अहम था। उन्होंने स्वीकार किया कि सभी के बिना यह मुमकिन नहीं हो पाता। शनाया ने दर्शकों से शो देखने की अपील करते हुए लिखा, कृपया जियोहॉटस्टार पर हमारा शो 'स्टूडेंट ऑफ द ईयर- आफ्टर डार्क' जरूर देखें। इसे आप लोगों के लिए बहुत मेहनत, खून-पसीना और आंसुओं (सचमुच!) के साथ बनाया गया है। आप सभी को बहुत प्यार।





हिन्दू धर्म के हिसाब से वैसे तो हर ग्यारस तिथि को महत्वपूर्ण माना गया है और कई लोग इस तिथि पर उपवास रखते हैं परन्तु देव उठनी ग्यारस का विशेष महत्व है. ऐसा कहा जाता है कि कार्तिक माह की एकादशी को भगवान विष्णु चार माह बाद योगनिद्रा से जागे थे और इसलिए चातुर्मास के बाद अब यह पहला मुहूर्त होता है जिसे सभी कार्यों के लिए बहुत शुभ माना जाता है. सबके पालनकर्ता श्री हरि है, इसलिए सनातन धर्मावलंबी प्रत्येक मांगलिक कार्यों का शुभारंभ भगवान विष्णु को साक्षी मानकर करते हैं. आज के दिन तुलसी विवाह से शादी का मौसम भी शुरू होता है. तुलसी विवाह एक रस्म है जिसमें आज के दिन तुलसी जी का विवाह विष्णु भगवान के साथ किया जाता है.



देवउठनी एकादशी

विष्णु-लक्ष्मी की उपासना का दिन

दीपावली के 11 दिन बाद देव प्रबोध उत्सव और तुलसी के विवाह को देवउठनी एकादशी कहते हैं। एकादशी का यह पर्व बड़े उत्साह से मनाया जाता है। क्षीरसागर में शयन कर रहे श्री हरि विष्णु को जगाकर उनसे मांगलिक कार्यों की शुरूआत कराने की प्रार्थना की जाती है। मंदिरों के व घरों में गन्नों के मंडप बनाकर श्रद्धालु भगवान लक्ष्मीनारायण का पूजन कर उन्हें बेर, चने की भाजी, आँवला सहित अन्य मौसमी फल व सब्जियों के साथ पकवान का भोग अर्पित किए जाते हैं। मंडप में शालिगराम की प्रतिमा व तुलसी का पौधा रखकर उनका विवाह कराया जाता है। इसके बाद मण्डप की परिक्रमा करते हुए भगवान से कुँवारों के विवाह कराने और विवाहितों के गौना कराने की प्रार्थना की जाती है। दीप मालिकाओं से घरों को रोशन किया जाएगा और बच्चे पटाखे चलाकर खुशियाँ मनाते हैं।

कैसे करें ग्यारस के दिन पूजन

- देवउठनी ग्यारस के दिन ब्रह्म मुहूर्त में जल्दी उठकर स्नान करना चाहिए।
- इस दिन घर के दरवाजे को पानी से स्वच्छ करना चाहिए, फिर चूने व गेरू से देवा बनाने चाहिए।
- उसके ऊपर गन्ने का मंडप सजाने के बाद देवताओं की स्थापना करना चाहिए। भगवान विष्णु का पूजन करते समय गुड़, रूई, रोली, अक्षत, चावल, पुष्प रखना चाहिए।
- पूजन में दीप जलाकर देव उठने का उत्सव मनाते हुए 'उठो देव बैठो देव' का गीत गाना चाहिए।

सामग्री- गंगा जल, शुद्ध मिट्टी, कुश, सप्तधान्य, हल्दी, कुमकुम, अक्षत, पंचरत्न, लाल वस्त्र, कपूर, पान, घी, सुपारी, रोली, दूध, दही, शहद, फल, शकर, फूल, नैवेद्य, गन्ने, हवन सामग्री, तुलसी पौधा, विष्णु प्रतिमा।

क्यों मनाते हैं देवउठनी एकादशी

पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु व जलंधर के बीच युद्ध होता है। जलंधर की पत्नी तुलसी पतिव्रता रहती हैं। इसके कारण विष्णु जलंधर को पराजित नहीं कर पा रहे थे। जलंधर को पराजित करने के लिए भगवान युक्ति के तहत जालंधर का रूप धारण कर तुलसी का सतीत्व भंग करने पहुँच गए। तुलसी का सतीत्व भंग होते ही भगवान विष्णु जलंधर को युद्ध में पराजित कर देते हैं। युद्ध में जलंधर मारा जाता है। भगवान विष्णु तुलसी को वरदान देते हैं कि वे उनके साथ पूजी जाएँगी। एक अन्य कथा के अनुसार गंगा राधा को जड़त्व रूप हो जाने व राधा को गंगा के जल रूप हो जाने का शाप देती हैं। राधा व गंगा दोनों ने भगवान कृष्ण को पाषाण रूप हो जाने का शाप दे दिया। इसके कारण ही राधा तुलसी, गंगा नदी व कृष्ण सालिगराम के रूप में प्रसिद्ध हुए। प्रबोधिनी एकादशी के दिन सालिग्राम, तुलसी व शंख का पूजन करने से विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। देव प्रबोधिनी एकादशी का महत्व शास्त्रों में उल्लेखित है। गोधूलि बेला में तुलसी विवाह करने का पुण्य लिया जाता है। एकादशी व्रत और कथा श्रवण से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

देवोत्थान एकादशी

कार्तिक शुक्ल एकादशी को तुलसी पूजन का उत्सव मनाया जाता है, किन्तु उत्तर भारत में इसका विशेष महत्व है। तुलसी को विष्णु-प्रिया भी कहते है। वैसे तो तुलसी विवाह के लिए कार्तिक शुक्ल नवमी की तिथि ठीक है परंतु कुछ लोग एकादशी से पूर्णिमा तक तुलसी पूजन कर पाँचवें दिन तुलसी का विवाह करते हैं। तुलसी विवाह की यही पद्धति अधिक प्रचलित है। इस दिन से हिन्दू समाज में विवाहादि मांगलिक कार्य भी पुनः प्रारंभ हो जाते हैं। इस एकादशी के उपवास से उत्तम फल की प्राप्ति होती है।



देवउठनी एकादशी व्रत कथा

कार्तिक माह की शुक्ल पक्ष की एकादशी को देवउठनी एकादशी कहा जाता है। इसे देवोत्थान एकादशी, देवउठनी ग्यारस, प्रबोधिनी एकादशी आदि नामों से भी जाना जाता है। एक राजा के राज्य में सभी लोग एकादशी का व्रत रखते थे। प्रजा तथा नौकर-चाकरों से लेकर पशुओं तक को एकादशी के दिन अन्न नहीं दिया जाता था। एक दिन किसी दूसरे राज्य का एक व्यक्ति राजा के पास आकर बोला- महाराज! कृपा करके मुझे नौकरी पर रख लें। तब राजा ने उसके सामने एक शर्त रखी कि ठीक है, रख लेते हैं। किन्तु रोज तो तुम्हें खाने को सब कुछ मिलेगा, पर एकादशी को अन्न नहीं मिलेगा। उस व्यक्ति ने उस समय हाँ कर ली, पर एकादशी के दिन जब उसे फलाहार का सामान दिया गया तो वह राजा के सामने जाकर गिड़गिड़ाने लगा- महाराज! इससे मेरा पेट नहीं भरेगा। मैं भूखा ही मर जाऊँगा। मुझे अन्न दे दो। राजा ने उसे शर्त की बात याद दिलाई, पर वह अन्न छोड़ने को राजी नहीं हुआ, तब राजा ने उसे आटा-दाल-चावल आदि दिए। वह नित्य की तरह नदी पर पहुँचा और स्नान कर भोजन पकाने लगा। जब भोजन बन गया तो वह भगवान को बुलाने लगा- आओ भगवान! भोजन तैयार है।

पंद्रह दिन बाद अगली एकादशी को वह राजा से कहने लगा कि महाराज, मुझे दुगुना सामान दीजिए। उस दिन तो मैं भूखा ही रह गया। राजा ने कारण पूछा तो उसने बताया कि हमारे साथ भगवान भी खाते हैं। इसीलिए हम दोनों के लिए ये सामान पूरा नहीं होता।

बुलाने पर पीताम्बर धारण किए भगवान चतुर्भुज रूप में आ पहुँचे तथा प्रेम से उसके साथ भोजन करने लगे। भोजनादि करके भगवान अंतर्धान हो गए तथा वह अपने काम पर चला गया।

पंद्रह दिन बाद अगली एकादशी को वह राजा से कहने लगा कि महाराज, मुझे दुगुना सामान दीजिए। उस दिन तो मैं भूखा ही रह गया। राजा ने कारण पूछा तो उसने बताया कि हमारे साथ भगवान भी खाते हैं। इसीलिए हम दोनों के लिए ये सामान पूरा नहीं होता। यह सुनकर राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला- मैं नहीं मान सकता कि भगवान तुम्हारे साथ खाते हैं। मैं तो इतना व्रत रखता हूँ, पूजा करता हूँ, पर भगवान ने मुझे कभी दर्शन नहीं दिए।

राजा की बात सुनकर वह बोला- महाराज! यदि विश्वास न हो तो साथ चलकर देख लें। राजा एक पेड़ के पीछे छिपकर बैठ गया। उस व्यक्ति ने भोजन बनाया तथा भगवान को शाम तक पुकारता रहा, परंतु भगवान न आए। अंत में उसने कहा- हे भगवान! यदि आप नहीं आए तो मैं नदी में कूदकर प्राण त्याग दूँगा। लेकिन भगवान नहीं आए, तब वह प्राण त्यागने के उद्देश्य से नदी की तरफ बढ़ा। प्राण त्यागने का उसका दृढ़ इरादा जान शीघ्र ही भगवान ने प्रकट होकर उसे रोक लिया और साथ बैठकर भोजन करने लगे। खा-पीकर वे उसे अपने विमान में बिठाकर अपने धाम ले गए। यह देख राजा ने सोचा कि व्रत-उपवास से तब तक कोई फायदा नहीं होता, जब तक मन शुद्ध न हो। इससे राजा को ज्ञान मिला। वह भी मन से व्रत-उपवास करने लगा और अंत में स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

कैसे करें व्रत-पूजन

- व्रती स्त्रियां इस दिन प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर आंगन में चौक बनाएं।
- पश्चात भगवान विष्णु के चरणों को कलात्मक रूप से अंकित करें।
- फिर दिन की तेज धूप में विष्णु के चरणों को ढंक दें।
- देवउठनी एकादशी को रात्रि के समय सुभाषित स्त्रोत पाठ, भगवत कथा और पुराणादि का श्रवण और भजन आदि का गायन करें।
- घंटा, शंख, मृदंग, नगाड़े और वीणा बजाएं।
- विविध प्रकार के खेल-कूद, लीला और नाच आदि के साथ इस मंत्र का उच्चारण करते हुए भगवान को जगाएं -

उत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पतये। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत सुप्तं भवेदिदम॥
उत्थिते चेष्टते सर्वमुत्तिष्ठोत्तिष्ठ माधव। गतामेघा वियच्चैव निर्मलं निर्मलादिशः॥
शारदानि च पुष्पाणि गृहाण मम केशव।

इसके बाद विधिवत पूजा करें।

कैसे करें व्रत-पूजन

- पूजन के लिए भगवान का मन्दिर अथवा सिंहासन को विभिन्न प्रकार के लता पत्र, फल, पुष्प और वंदनबार आदि से सजाएं।
- आंगन में देवोत्थान का चित्र बनाएं, तत्पश्चात फल, पकवान, सिंघाड़े, गन्ने आदि चढ़ाकर डलिया से ढंक दें तथा दीपक जलाएं।
- विष्णु पूजा या पंचदेव पूजा विधान अथवा सामार्चनचन्द्रिका आदि के अनुसार श्रद्धापूर्वक पूजन तथा दीपक, कपूर आदि से आरती करें।
- इसके बाद इस मंत्र से पुष्पांजलि अर्पित करें -

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः॥

पश्चात इस मंत्र से प्रार्थना करें -

इयं तु द्वादशी देव प्रबोधाय विनिर्मिता। त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थं शेषशायिना॥
इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन॥

साथ ही ब्रह्मद, नारद, पाराशर, पुण्डरीक, व्यास, अम्बरीष,शुक, शौनक और भीष्मादि भक्तों का स्मरण करके चरणामृत, पंचामृत व प्रसाद वितरित करें। तत्पश्चात एक रथ में भगवान को विराजमान कर स्वयं उसे खींचें तथा नगर, ग्राम या गलियों में भ्रमण कराएं। (शास्त्रानुसार जिस समय वामन भगवान तीन पद भूमि लेकर विदा हुए थे, उस समय दैत्यराज बलि ने वामनजी को रथ में विराजमान कर स्वयं उसे चलाया था। ऐसा करने से समुत्थिते ततो विष्णौ क्रियाः सर्वाः प्रवर्तयेत के अनुसार भगवान विष्णु योग निद्रा को त्याग कर सभी प्रकार की क्रिया करने में प्रवृत्त हो जाते हैं।) अंत में कथा श्रवण कर प्रसाद का वितरण करें।



देव उठनी ग्यारस का महत्व

हिन्दू धर्म के हिसाब से वैसे तो हर ग्यारस तिथि को महत्वपूर्ण माना गया है और कई लोग इस तिथि पर उपवास रखते हैं परन्तु देव उठनी ग्यारस का विशेष महत्व है. ऐसा कहा जाता है कि कार्तिक माह की एकादशी को भगवान विष्णु चार माह बाद योगनिद्रा से जागे थे और इसलिए चातुर्मास के बाद अब यह पहला मुहूर्त होता है जिसे सभी कार्यों के लिए बहुत शुभ माना जाता है. सबके पालनकर्ता श्री हरि है, इसलिए सनातन धर्मावलंबी प्रत्येक मांगलिक कार्यों का शुभारंभ भगवान विष्णु को साक्षी मानकर करते हैं. आज के दिन तुलसी विवाह से शादी का मौसम भी शुरू होता है. तुलसी विवाह एक रस्म है जिसमें आज के दिन तुलसी जी का विवाह विष्णु भगवान के साथ किया जाता है. आज के प्रसंग में देखें तो चातुर्मास के बाद देव उठनी ग्यारस से पूरे बाजार में हल चल शुरू हो जाती है. शादी का मुहूर्त निकलने के कारण लोग खरीदी में लग जाते हैं और इस तरह व्यापार-व्यवसाय में बड़ा उछाल आता है. भारत की यह सामाजिक संरचना ही यहाँ की आर्थिक संरचना को इतना सुदृढ़ बनाती है. तीज-त्योहार सिर्फ खुशियों का बहाना नहीं बल्कि व्यापार-व्यवसाय को बढ़ावा देने का भी बहाना है. इन्ही प्रथाओं के चलते भारत में कभी भी रिसेशन नहीं आ सकता. मैं देव उठनी ग्यारस और सभी त्यौहारों को बहुत शुभ मानता हूँ, देव उठनी ग्यारस का धार्मिक महत्व और हमारी संस्कृति का व्यवहारिक दृष्टिकोण देखकर भारतीय संस्कृति के प्रति मेरी श्रद्धा और भी बढ़ गई.आज के दिन कई जगहों पर सामूहिक विवाह का आयोजन भी रहता है. यह भी हमारी संस्कृति का एक अमूल्य पहलू है. जो असमर्थ लोग शादी में ज्यादा व्यय नहीं कर सकते उनके लिए समाज द्वारा की गई यह कुशल व्यवस्था अत्यंत सराहनीय है.आज देव उठनी ग्यारस के दिन मैं सिर्फ इतना कहना चाहूँगा कि जिनकी आकृति अतिशय शांत है, जो शेषनाग की शय्या पर शयन किए हुए हैं, जिनकी नाभि में कमल है, जो सब देवताओं द्वारा पूज्य है, जो संपूर्ण विश्व के आधार हैं, जो आकाश के सदृश सर्वत्र व्याप्त हैं, नीले मेघ के समान जिनका वर्ण है, जिनके सभी अंग अत्यंत सुंदर है, जो योगियों द्वारा ध्यान करके प्राप्त किये जाते हैं, जो सब लोकों के स्वामी हैं, जो जन्म-मरणरूप भय को दूर करने वाले हैं, ऐसे लक्ष्मीपति, कमलनयन, भगवान विष्णु को मैं प्रणाम करता हूँ !





तुलसी विवाह

भगवान विष्णु के स्वरूप शालिग्राम और माता तुलसी के मिलन का पर्व तुलसी विवाह हिन्दू पंचांग के अनुसार कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को मनाया जाता है. देवप्रबोधिनी एकादशी के दिन मनाए जानेवाले इस मांगलिक प्रसंग के सुअवसर पर सनातन धर्मावलम्बी घर की साफ-सफाई करते हैं और रंगोली सजाते हैं. शाम के समय तुलसी चौरा के पास गन्ने का भव्य मंडप बनाकर उसमें साक्षात नारायण स्वरुप शालिग्राम की मूर्ति रखते हैं और फिर विधि-विधानपूर्वक उनके विवाह को संपन्न कराते हैं. पौराणिक कथानुसार एक बार सृष्टि के कल्याण के उद्देश्य से भगवान विष्णु ने राजा जालंधर की पत्नी वृंदा के सतीत्व को भंग कर दिया. इस पर सती वृंदा ने उन्हें श्राप दे दिया और भगवान विष्णु पत्थर बन गए, जिस कारणवश प्रभु को शालिग्राम भी कहा जाता है और भक्तगण इस रूप में भी उनकी पूजा करते है. इसी श्राप से मुक्ति पाने के लिए भगवान विष्णु को अपने शालिग्राम स्वरुप में तुलसी से विवाह करना पड़ा था और उसी समय से तुलसी विवाह का यह अनूठा रस्म प्रत्येक साल मनाया जाता है. तुलसी विवाह के सुअवसर पर व्रत रखने का बड़ा ही महत्व है. आस्थावान भक्तों के अनुसार इस दिन श्रद्धा-भक्ति और विधिपूर्वक व्रत करने से व्रती के इस जन्म के साथ-साथ पूर्वजन्म के भी सारे पाप मिट जाते हैं और उसे पुण्य की प्राप्ति होती है.

तुलसी विवाह विधि

हिन्दू पुराणों में तुलसी जी को विष्णु प्रिया कहा गया है। कार्तिक शुक्ल एकादशी को तुलसी जी और भगवान विष्णु का विवाह कराने की प्रथा है। इस विवाह में तुलसी के पौधे और विष्णु जी की मूर्ति या शालिग्राम पाषाण का पूर्ण वैदिक रूप से विवाह कराया जाता है। इस वर्ष तुलसी विवाह का शुभ दिन 13 नवंबर 2013 है। तुलसी विवाह के दिन व्रत करें और तुलसी जी के साथ विष्णु जी की मूर्ति घर में स्थापित करें। इसके बाद सुयोग्य पंडित या ब्राह्मण की सहायता से विधिवत रूप से तुलसी विवाह संपन्न कराएं। द्वादशी के दिन पुन- तुलसी जी और विष्णु जी की पूजा करें और व्रत का पारण करें। भोजन के पश्चात तुलसी के स्वत- गिरे हुए पत्तों को खाना शुभ होता है।

भगवान विष्णु-लक्ष्मी के निकट जलाएं दीपक

शास्त्रों में कार्तिक मास को श्रेष्ठ मास माना गया है। मासों में कार्तिक मास, देवताओं में भगवान विष्णु और तीर्थों में नारायण तीर्थ बद्रिकाश्रम श्रेष्ठ है। ये तीनों कलियुग में अत्यंत दुर्लभ हैं। अर्थात कार्तिक मास के समान कोई भी मास नहीं है। पुराण में वर्णित है कि यह मास धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को देने वाला है। विशेष रूप से स्नान दान एवं तुलसी की पूजा इस मास में विशेष फलदायी है। कार्तिक मास में दीपदान करने से पाप नष्ट होते हैं। स्कंद पुराण में वर्णित है कि इस मास में जो व्यक्ति देवालय, नदी के किनारे, तुलसी के समक्ष एवं शयन कक्ष में दीपक जलाता है उसे सर्व सुख प्राप्त होते हैं। इस मास में भगवान विष्णु एवं लक्ष्मी के निकट दीपक जलाने से अमित फल प्राप्त होते हैं। इस मास में की गई भगवान विष्णु एवं मां लक्ष्मी की उपासना असीमित फलदायी होती है। आषाढ़ शुक्ल एकादशी की तिथि को देव शयन करते हैं और इस कार्तिक शुक्ल एकादशी के दिन उठते हैं। इसीलिए इसे देवोत्थान (देवउठनी) एकादशी कहा जाता है। कहा जाता है कि इस दिन भगवान विष्णु, जो क्षीरसागर में सोए हुए थे, चार माह उपरान्त जागे थे। विष्णुजी के शयन काल के चार मासों में विवाहादि मांगलिक कार्यों का आयोजन करना निषेध है। हरि के जागने के बाद ही इस एकादशी से सभी शुभ तथा मांगलिक कार्य शुरू किए जाते हैं। इस दिन गंगा-स्नान, दीपदान, अन्य दानों आदि का विशेष महत्व है।

ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अंगिरा और आदित्य ने इसे महापुनीत पर्व कहा है। इसलिए इसमें गंगा स्नान, दीपदान, होम, यज्ञ तथा उपासना आदि का विशेष महत्व है। कहा गया है कि यदि स्नान में कुशा और दान करते समय हाथ में जल व जप करते समय संख्या का संकल्प नहीं किया जाए तो कर्म फल की प्राप्ति नहीं होती है। शास्त्र के नियमों का पालन करते हुए इस दिन स्नान करते समय पहले हाथ-पैर धो लें फिर आचमन करके हाथ में कुशा लेकर स्नान करें, इसी प्रकार दान देते समय हाथ में जल लेकर दान करें। आप यज्ञ और जप कर रहे है तो पहले संख्या का संकल्प कर लें फिर जप और यज्ञादि कर्म करें।

कलेक्टर ने लिमो व सड़क अतरिया धान खरीदी केंद्रों का किया निरीक्षण, किसानों से की चर्चा

कलेक्टर ने केंद्र प्रभारियों को खरीदी प्रक्रिया पारदर्शी व सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने तथा किसानों की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए

नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

कलेक्टर इंद्रजीत सिंह चंद्रवाल ने गंडई क्षेत्र के लिमो एवं सड़क अतरिया धान खरीदी केंद्रों का निरीक्षण कर समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की प्रगति और उपलब्ध व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने धान विक्रय करने पहुंचे किसानों से चर्चा कर टोकन प्राप्त करने एवं उपज बेचने की प्रक्रिया के संबंध में जानकारी ली। कलेक्टर ने केंद्र प्रभारियों को खरीदी प्रक्रिया पारदर्शी एवं सुव्यवस्थित ढंग से संचालित करने तथा किसानों की सुविधाओं का विशेष ध्यान रखने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने किसानों से सीधे संवाद करते हुए खरीदी केंद्रों में उनके अनुभव जाने और पूछा कि धान विक्रय में किसी प्रकार की परेशानी तो नहीं हो रही है। उन्होंने कहा कि किसानों की समस्याओं को प्राथमिकता से सुना जाए और उनका समय पर निराकरण किया जाए। किसानों को खरीदी संबंधी आवश्यक जानकारी स्पष्ट रूप से उपलब्ध कराई जाए, ताकि उन्हें अनावश्यक भटकना या प्रतीक्षा न करनी पड़े।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने केंद्र प्रभारियों से जारी टोकन, धान विक्रय कर चुके किसानों की संख्या तथा अब तक खरीदे गए धान की कुल मात्रा की जानकारी ली। उन्होंने टोकन के अनुरूप धान की आवक एवं खरीदी की प्रगति की समीक्षा की। कलेक्टर ने निर्देश दिए कि निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार धान की गुणवत्ता एवं नमी की जांच की जाए और तौल में शुद्धता सुनिश्चित



की जाए। खरीदी से संबंधित अभिलेखों एवं ऑनलाइन प्रविष्टियों को नियमित रूप से अद्यतन रखा जाए।

कलेक्टर ने खरीदे गए धान की स्टेकिंग एवं भंडारण व्यवस्था का भी निरीक्षण किया। उन्होंने धान की बोरियों को निर्धारित मानकों के अनुरूप व्यवस्थित रखने, स्टेक के बीच आवश्यक स्थान बनाए रखने और धान को नमी एवं संभावित वर्षा से सुरक्षित रखने के लिए पर्याप्त इंतजाम करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि केंद्र परिसर में धान की आवक, तौल और भंडारण के लिए समुचित स्थान बना रहे, जिससे खरीदी कार्य निर्बाध रूप से संचालित हो सके।

किसानों की सुविधाओं की समीक्षा करते हुए कलेक्टर ने स्वच्छ पेयजल, बैठने एवं छाया की समुचित व्यवस्था बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने खरीदी केंद्रों में साफ-सफाई रखने तथा किसानों और वाहनों के आवागमन को व्यवस्थित करने को कहा। साथ ही तौल उपकरणों की कार्यशीलता एवं आवश्यक बारदानों की उपलब्धता पर नियमित नजर रखने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने केंद्र प्रभारियों को खरीदी अवधि के दौरान व्यवस्थाओं की निरंतर निगरानी करने तथा किसी भी समस्या की सूचना संबंधित अधिकारियों को समय पर देने को कहा। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसानों को सहज एवं सुगम धान विक्रय की सुविधा उपलब्ध कराने के लिए संबंधित अधिकारी-कर्मचारी आपसी समन्वय के साथ जिम्मेदारीपूर्वक कार्य करें।

खास खबर

3,100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान विक्रय कर खुश हुए ग्राम कटंगीकला के किसान चरण पटेल



नई दृष्टिबिंदु / खैरागढ़

खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के अंतर्गत 15 नवंबर से धान खरीदी शुरू होने के साथ ही किसानों की मेहनत की उपज उपार्जन केंद्रों तक पहुंचने लगी है। खैरागढ़छुईखदानझगंडई जिले के ग्राम कटंगीकला निवासी किसान चरण पटेल, पिता नारायण पटेल ने 55 क्विंटल 20 किलो धान का विक्रय किया। धान के लिए 3,100 रुपए प्रति क्विंटल की दर निर्धारित होने और सुविधाजनक विक्रय व्यवस्था से वे प्रसन्न हैं।

खेती में महीनों की मेहनत के बाद धान का सुविधाजनक ढंग से विक्रय होना किसानों के लिए राहत लेकर आता है। फसल की कटाई, मिंजाई और उपज तैयार करने के बाद खरीदी केंद्र में सुचारु व्यवस्था मिलने से किसानों की चिंता कम होती है। चरण पटेल के लिए भी अपनी उपज का व्यवस्थित ढंग से विक्रय करना संतोष का अवसर बना है।

धान विक्रय को आसान बनाने में किसान-तुंहर टोकन मोबाइल ऐप की सुविधा महत्वपूर्ण है। किसान घर बैठे टोकन प्राप्त कर निर्धारित तिथि के अनुसार अपनी उपज बेचने की तैयारी कर सकते हैं। इससे टोकन के लिए बार-बार समिति जाने की आवश्यकता कम होती है और समय की बचत होती है। विक्रय की तिथि पहले से पता होने पर धान की बोरी भरने तथा परिवहन की व्यवस्था करने में भी सहूलियत मिलती है।

धान खरीदी केंद्रों में किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए खरीदी प्रक्रिया व्यवस्थित रूप से संचालित की जा रही है। निर्धारित टोकन के अनुसार धान की आवक से किसानों को अपनी बारी पर उपज का विक्रय करने में सुविधा होती है। केंद्र में धान की गुणवत्ता जांच, तौल और खरीदी संबंधी अभिलेख तैयार करने की क्रमबद्ध प्रक्रिया से विक्रय आसान होता है। संबंधित कर्मचारियों से आवश्यक जानकारी और मार्गदर्शन मिलने से किसानों को औपचारिकताएं पूरी करने में मदद मिलती है।

जिले में इस वर्ष 72 धान उपार्जन केंद्रों के माध्यम से खरीदी की व्यवस्था की गई है। इनमें 21 नए केंद्र शामिल हैं। उपार्जन केंद्रों का विस्तार होने से आसपास के किसानों को अपनी उपज बेचने के लिए अधिक दूरी तय करने की आवश्यकता कम होगी। ऑनलाइन टोकन और केंद्रों में व्यवस्थित खरीदी से चरण पटेल जैसे किसानों को अपनी मेहनत की उपज समय पर बेचने में सहूलियत मिल रही है।

धान खरीदी के पहले ही दिन किसान कवलदास ने बेचा 25 क्विंटल 20 किलो धान, चेहरे पर दिखी खुशी

कवर्धा। खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 के तहत कबीरधाम जिले में समर्थन मूल्य पर धान खरीदी शुरू होते ही किसानों में उत्साह देखने को मिल रहा है। धान खरीदी के पहले ही दिन बोड़ला विकासखंड के ग्राम हरिनछपरा निवासी किसान कवलदास ने अपनी उपज बेचकर इस खुशी को जाहिर किया। उन्होंने हरिनछपरा धान उपार्जन केंद्र में 25 क्विंटल 20 किलो धान का विक्रय किया। पहले ही दिन धान बेचने से किसान के चेहरे पर खुशी और संतोष नजर आया।

किसान कवलदास ने बताया कि उन्होंने अपनी 1 एकड़ 30 डिसमिल कृषि भूमि में धान की खेती की थी। फसल तैयार होने के बाद उन्हें धान खरीदी शुरू होने का इंतजार था। खरीदी प्रारंभ होते ही वे अपनी उपज लेकर उपार्जन केंद्र पहुंचे और निर्धारित प्रक्रिया के तहत 25 क्विंटल 20 किलो धान बेचा। उन्होंने कहा कि पहले ही दिन अपनी मेहनत से तैयार फसल का विक्रय कर उन्हें काफी खुशी हुई है। शासन द्वारा किसानों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए की गई व्यवस्थाओं से किसानों को राहत मिल रही है। उन्होंने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि सरकार का यह निर्णय खेती-किसानी से जुड़े परिवारों के लिए राहत देने वाला है। कवलदास ने धान खरीदी व्यवस्था में किए गए नए प्रावधानों की सराहना करते हुए कहा कि यह किसानों के हित में महत्वपूर्ण फैसला है। धान की उपज कम बेचने पर भी पूरा लाभ मिलेगा। अब कम मात्रा में धान बेचने वाले किसानों को भी निर्धारित प्रावधानों के अनुसार अंतर की राशि का लाभ मिलने से राहत मिलेगी। इससे किसान अपनी वास्तविक उपज के अनुसार धान का विक्रय कर सकेंगे और बिचौलियों पर निर्भरता कम करने में भी मदद मिलेगी।

राज्य सरकार द्वारा समर्थन मूल्य पर धान खरीदी की सुचारु व्यवस्था और किसानों के हित में किए जा रहे नए प्रावधानों का उद्देश्य किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना है।

जनजातीय गौरव दिवस पर बेमेतरा में दिखी समृद्ध संस्कृति और परंपराओं की अनुपम झलक

जनजातीय वीरों का योगदान अविस्मरणीय : विधायक दीपेश साहू

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

धरती आबा भगवान बिरसा मुंडा की स्मृति में जिला मुख्यालय बेमेतरा के टाउन हॉल सिंघौरी में जनजातीय गौरव दिवस का जिला स्तरीय कार्यक्रम हर्षोल्लास और गरिमामय वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जनजातीय समाज की समृद्ध संस्कृति, गौरवशाली इतिहास, परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत की मनमोहक झलक देखने को मिली। जनजातीय लोकगीतों, लोकनृत्यों, पारंपरिक वाद्ययंत्रों और आकर्षक वेशभूषा से पूरा परिसर सांस्कृतिक उल्लास के रंगों में सराबोर रहा। इस अवसर पर शिक्षा, खेल, कला, संस्कृति, समाजसेवा एवं विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट योगदान देने वाली जनजातीय प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सांसद लक्ष्मी वर्मा ने भगवान बिरसा मुंडा के योगदान को स्मरण करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उनके गौरवशाली इतिहास और बलिदान को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया है। उन्होंने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा ने मात्र 25 वर्ष की आयु में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध संघर्ष करते हुए जनजातीय समाज को संगठित किया और उनके अधिकारों की रक्षा के लिए उलगुलान का आह्वान किया। उनका जीवन त्याग, साहस, स्वाभिमान और देशभक्ति का अनुपम उदाहरण है।

सांसद श्रीमती वर्मा ने कहा कि जनजातीय समाज ने सदियों से जल, जंगल और जमीन के संरक्षण के साथ भारतीय संस्कृति और परंपराओं को समृद्ध बनाया है। देश की विविध जनजातीय संस्कृतियां भारत की एकता और अखंडता को मजबूत करती हैं। उन्होंने छत्तीसगढ़ के महान क्रांतिकारी शहीद वीर नारायण सिंह, गेंदसिंह और गुंडाधूर के योगदान को याद करते हुए कहा कि इन वीरों का बलिदान सदैव प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में बस्तर से नक्सलवाद समाप्त करने के लिए



प्रभावी प्रयास किए जा रहे हैं तथा क्षेत्र में शांति, विश्वास और विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। केंद्र एवं राज्य सरकार द्वारा जनजातीय समाज के शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, रोजगार और कौशल विकास के लिए विभिन्न कल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही हैं।

कार्यक्रम में जनजातीय कलाकारों ने गोंडी, हल्बी और बिंझवारी सहित विभिन्न लोकनृत्यों की आकर्षक प्रस्तुतियां दीं। मांदर और झांझ की थाप पर कलाकारों की प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्कूली बालिकाओं ने जनजातीय लोकगीतों पर सामूहिक नृत्य प्रस्तुत किया। पारंपरिक वेशभूषा एवं आभूषणों से सुसज्जित महिलाओं और युवाओं ने जनजातीय संस्कृति की विशिष्ट पहचान को जीवंत किया।

विधायक दीपेश साहू ने कहा कि जनजातीय समाज का इतिहास शौर्य, बलिदान और देशभक्ति से परिपूर्ण रहा है। स्वतंत्रता संग्राम में जनजातीय वीरों का योगदान अविस्मरणीय है। शहीद वीर नारायण सिंह सहित अनेक महान क्रांतिकारियों ने देश की स्वतंत्रता और जनजातीय समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष किया। विधायक ईश्वर साहू ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का संपूर्ण जीवन जनजातीय स्वाभिमान, अधिकारों और जल, जंगल, जमीन की रक्षा के लिए समर्पित रहा। उनके आदर्श आज भी समाज को प्रेरणा देते हैं।

कलेक्टर प्रतिष्ठा ममगाईं ने जनजातीय समाज के कल्याण के लिए संचालित विभिन्न शासकीय योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि जनजातीय विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, छात्रावास, आश्रम शाला, एकलव्य विद्यालय तथा युवाओं के लिए कौशल विकास एवं स्वरोजगार संबंधी योजनाएं संचालित हैं। इसके अतिरिक्त वन अधिकार पट्टा, आवास योजना, आयुष्मान भारत, उज्ज्वला योजना और जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं के माध्यम से जनजातीय परिवारों को लाभान्वित किया जा रहा है।

कार्यक्रम में शिक्षा, खेल, कला, संस्कृति, समाजसेवा, शासकीय सेवा एवं कृषि के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले जनजातीय युवाओं, महिलाओं, विद्यार्थियों और समाजसेवियों को शाल, श्रीफल, प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया। उपस्थित जनसमूह ने तालियों की गड़गड़ाहट से सम्मानित प्रतिभाओं का उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम के समापन पर जनजातीय गौरव, सांस्कृतिक विरासत, सामाजिक एकता और देश की अखंडता को बनाए रखने का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ राजकवाक बोर्ड के अध्यक्ष प्रहलाद रजक, अनुसूचित जाति आयोग के सदस्य दयावंत धर बाघे सहित जिला प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारी एवं बड़ी संख्या में जनजातीय समाज के लोग उपस्थित रहे।

धूमधाम से मनाई गई जलाराम बापा की 227वीं जयंती



नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

युग पुरुष श्री जलाराम बापा की 227वीं जयंती सोमवार को शहर में पूरी श्रद्धा और हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस अवसर पर गुजराती कॉलोनी स्थित कंचन बाग के श्री जलाराम मंदिर में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान और सांस्कृतिक-आध्यात्मिक आयोजन संपन्न हुए। सुबह से ही मंदिर परिसर में पूजा-अर्चना और दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का तांता लगा रहा, वहीं गुजराती समाज की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किए गए भजनों ने पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। श्री जलाराम सेवा सत्संग समिति व श्री लोहाणा महाजन समाज के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस जयंती महोत्सव की शहर में खासी धूम रही।

युग संत श्री जलाराम बापा के जन्मोत्सव पर उनके चरणों में शीश नवाने शहर के लोकप्रिय महापौर मधुसूदन यादव विशेष रूप से कंचन बाग मंदिर पहुंचे। उन्होंने बापा के दर्शन कर आशीर्वाद लिया और मंदिर में चल रहे महाप्रसादी भंडारे में शामिल होकर भोजन प्रसादी ग्रहण की। इस पावन अवसर पर शहर कांग्रेस अध्यक्ष जीतू मुदलियार, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर सिंह छाबड़ा, पूर्व पार्षद मनीष साहू, नगर निगम के ईई दीपक खांडे, सब इंजीनियर अनुप पांडे सहित कई गणमान्य नागरिकों ने जलाराम बापा के दर्शन कर महाप्रसादी का लाभ उठाया।

मंदिर के पुजारी महेंद्र शुक्ला ने बताया कि जयंती के अवसर पर विशाल महाप्रसादी का आयोजन किया गया था, जिसमें हजारों की संख्या में नर-नारियों ने पूरी श्रद्धा के साथ प्रसादी ग्रहण की। मंदिर में विराजित भगवान श्रीराम, लक्ष्मण, जानकी जी और हनुमान जी की प्रतिमाओं की विशेष पूजा-अर्चना की गई। दोपहर बाद शहर में श्री जलाराम बापा की एक भव्य और आकर्षक शोभायात्रा निकाली गई। इसमें बापा के अनुयायियों और सनातन धर्म के तमाम श्रद्धालुओं ने बड़ी संख्या में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

नशीली कफ सिरप का कारोबार करने वाला गिरफ्तार, 20 शीशी बरामद

भिलाई। सिविक सेंटर सेक्टर-06 स्थित जयंती स्टेडियम तालाब के पास खंडहर में नशीली कफ सिरप बेच रहे आरोपी को भिलाई नगर पुलिस ने गिरफ्तार किया है। मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने धेराबंदी कर सागर कंडरा उर्फ मग्गा (26), निवासी गांधी चौक भिलाई को पकड़ा। तलाशी में उसके पास से Codeine Phosphate युक्त प्रतिबंधित कफ सिरप की 20 शीशियां मिलीं। कुल 2 लीटर सिरप की कीमत 23,530 रुपए है। आरोपी के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट की धारा 8, 21(सी) के तहत अपराध दर्ज कर उसे जेल भेजा गया है।

नशामुक्ति का संदेश लेकर आगे आए खड़ौदा कला के विद्यार्थी, 107 लोगों ने ली शपथ

चित्रकला, निबंध और रंगोली प्रतियोगिता के जरिए विद्यार्थियों ने दिखाई रचनात्मक प्रतिभा, नशामुक्त समाज बनाने का लिया संकल्प

नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा

नशामुक्त समाज के निर्माण में युवाओं और विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से जिले में जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में कलेक्टर श्रीमती तुलिका प्रजापति के निर्देशानुसार एवं समाज कल्याण विभाग की उपसंचालक श्रीमती अभिलाषा पंडा के मार्गदर्शन में शासकीय हाई स्कूल खड़ौदा कला में नशामुक्त भारत अभियान के तहत जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को नशे के सेवन से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक दुष्परिणामों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। उन्हें नशे से दूर रहने के साथ ही अपने परिवार, आसपास के लोगों

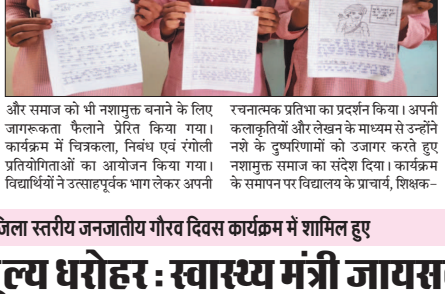



और समाज को भी नशामुक्त बनाने के लिए जागरूकता फैलाने प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में चित्रकला, निबंध एवं रंगोली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी रचनात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन किया। अपनी कलाकृतियों और लेखन के माध्यम से उन्होंने नशे के दुष्परिणामों को उजागर करते हुए नशामुक्त समाज का संदेश दिया। कार्यक्रम के समापन पर विद्यालय के प्राचार्य, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों सहित कुल 107 उपस्थित लोगों को नशामुक्ति की शपथ दिलाई गई। सभी ने स्वयं नशे से दूर रहने तथा अपने परिवार और समाज के अन्य लोगों को भी नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में समाज कल्याण विभाग एवं नशामुक्त भारत अभियान के वॉलेंटियर सालिक राम बांधवे सहित विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं का विशेष सहयोग रहा।

आयोजन

भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती पर आयोजित जिला स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए

जनजातीय समाज की संस्कृति हमारी अमूल्य धरोहर : स्वास्थ्य मंत्री जायसवाल

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

शहर के पद्मश्री गोविंदराम निर्मलकर ऑडिटोरियम में भगवान बिरसा मुंडा की 151वीं जयंती के उपलक्ष में जिला स्तरीय जनजातीय गौरव दिवस का गरिमामय आयोजन किया गया। इस भव्य समारोह में लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। कार्यक्रम में पारंपरिक बायसन हॉर्न मुकुट पहनाकर स्वास्थ्य मंत्री का आत्मीय स्वागत व अभिनंदन किया गया। इस दौरान मंत्री ने क्षेत्र के विकास और स्वास्थ्य सेवाओं को लेकर कई बड़ी घोषणाएं कीं।

स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार और नई सौगातों की घोषणा : समारोह को संबोधित करते हुए स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने राजनांदगांव के स्वास्थ्य ढांचे को और मजबूत करने की घोषणा करते हुए



कहा कि राजनांदगांव मेडिकल कॉलेज में एमआरआई मशीन की स्थापना के लिए स्वीकृति और निविदा प्रक्रिया पूरी हो चुकी है, जिसकी सुविधा जल्द ही मरीजों को मिलने लगेगी। इसके साथ ही, जिले में नवीन फिजियोथेरेपी कॉलेज भी शुरू किया जाएगा, जिसमें आगामी शैक्षणिक सत्र से पढ़ाई शुरू करने की योजना है। जनजातीय क्षेत्र के लोगों की मांग पर त्वरित कार्रवाई करते हुए मंत्री श्री जायसवाल ने बूचाटोला क्षेत्र के लिए 24 घंटे के भीतर नई एम्बुलेंस उपलब्ध कराने की घोषणा की, जिसे लेकर स्थानीय लोगों में काफी उत्साह देखा गया।

मंच से इन दिग्गजों ने भी रखे विचार : सांसद संतोष पाण्डेय ने कहा कि जनजातीय वीरों ने देश की आजादी में अमूल्य योगदान दिया है। आज प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जनजातीय गौरवशाली इतिहास को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान मिल रहा है, जिससे नई पीढ़ी को प्रेरणा मिल रही है।

महापौर मधुसूदन यादव ने कहा कि भगवान बिरसा मुंडा का जीवन हम सभी के लिए प्रेरणास्रोत है। उन्होंने मेडिकल कॉलेज में सीटी स्कैन और एमआरआई मशीन जैसी सौगातें मिलने पर स्वास्थ्य मंत्री का आभार व्यक्त किया। राज्य अनुसूचित जनजाति आयोग के उपाध्यक्ष एमडी ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरूआत की गई है, जिससे जनजातीय समुदाय के जीवन स्तर में सकारात्मक बदलाव आ रहा है।

हितग्राहियों को सामग्री वितरण और सम्मान : कार्यक्रम के दौरान निक्षय पोषण योजना के तहत 5 जनजातीय समूहों के हितग्राहियों को डीबीटी के माध्यम से कुल 24,000 रुपये की सहायता राशि सीधे उनके बैंक खातों में अंतरित की गई। इसके अलावा, 5 हितग्राहियों को निःशुल्क उपचार हेतु आयुष्मान भारत कार्ड का वितरण किया गया। साथ ही, विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों, मेधावी विद्यार्थियों और महिलाओं को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक के अध्यक्ष सचिन बघेल, जनपद अध्यक्ष प्रतिमा चंद्राकर, राजगामी संपदा न्यास की अध्यक्ष पूर्णिमा साहू, जिला पंचायत उपाध्यक्ष किरण साहू, कलेक्टर जितेन्द्र यादव, वनमंडलाधिकारी आयुष जैन, जिला पंचायत सीईओ दुर्गा प्रसाद अधिकारी सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, अधिकारी और नागरिक उपस्थित थे।

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई के न्यायालय मे मामला

क्रमांक : 2026111010000006/

विषय:– अ–6
मामले की श्रेणी:– राजस्व
सन:– 2026–2027
कोहका प.ह.न. 00045 [7394(0.0100हे.)]
पक्षकारो का विवरण – आवेदक पक्षकार संतोष राजपूत, जगमोहन सिंह, सतीश परिहार,
अनावेदक पक्षकार – राधिकाबाई,

इंजहार

आवेदक– संतोष राजपूत पिता/पति विभाग– स्व. कंवल सिंह पता– कुरुल खदान सुरेला भिलाई अन्य 2 द्वारा ग्राम – कोहका प.ह.न. 45 ता.नि.न. कोहका तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि स्वामी हक की भूमि ख.न. 7394 रकबा 0.0100 हे. है जो भूमिस्वामी राधिका बाई पिता स्व. इंजत सिंह के नाम पर दर्ज है। भूमिस्वामी राधिका बाई पिता स्व. इंजत सिंह, को फूलु दिनांक 09.12.2024 को एवं आवेदिका के पति कंवल सिंह पिता स्व. चौहान सिंह को भी जाने के कारण मृत्यु का जान ताले से निवेदिका कर उसके पैन खरिदने का जान दर्ज किये जाने हेतु पोती सम्बंधन पावर आवेदन पत्र मय खसरा पी. ८ फूलु प्रमाण पत्र की छाया की प्रति प्रस्तुत किया है।

आशय इस संबंध में किसी व्यक्ति अथवा संस्था को किसी प्रकार का उजर या बाधा हो तो वह नियत पेशी दिनांक 23.11.2026 तक स्वयं अथवा अपने विधिव्यवस्था अधिकारी के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होकर लिखित में आपत्ति आवेदन पेश कर सकते है। समयावधि पश्चात आपत्ति प्रस्तुत होने पर कोई विचार नही किया जावेगा।

यह इंजहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 02/11/2026 को जारी किया जाता है।

DIKESHWAR SAHU
अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

न्यायालय अतिरिक्त तहसीलदार भिलाई के न्यायालय मे मामला

क्रमांक : 20261110100000 67

विषय:– ब–121
मामले की श्रेणी:– राजस्व
सन:– 2026–2027
खेदामारा प.ह.न. 00011 [(हे0)]
पक्षकारो का विवरण – आवेदक पक्षकार इजहार खान,
अनावेदक पक्षकार –

इंजहार

एतद द्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक इजहार खान पिता/पति/विभाग– स्व० बशीर खान पता– भिलाई द्वारावा ग्राम– खेदामारा प.ह.न. ।। रा.नि.म.जेवरा सिरसा तहसील व जिला दुर्ग स्थित भूमि ख.न 670/3 रकबा 3250 वर्गफीट भूमि का बटाकन किये जाने बाबत आवेदन पत्र मय खसरा चौ.1, की छाया की प्रति प्रस्तुत किया है।

उपरोक्त भूमि का नामान्तरण किये जाने पर जिस किसी भी व्यक्ति संस्था को उजर दावा हो तो सुनवाई तिथि दिनांक 23/11/2026तक या उसके पूर्व स्वयं या अपने मान्य अधिकृताण के साथ उपस्थित होकर अपना आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह इंजहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज दिनांक 30/10/2026 को जारी किया जाता है।

DIKESHWAR SAHU
अतिरिक्त तहसीलदार
भिलाई नगर

निर्वाचन तैयारियों का नगर निगम आयुक्त ने किया निरीक्षण, समय पर व्यवस्था पूरी करने के निर्देश





नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

नगर पालिक निगम भिलाई की आयुक्त सुरुचि सिंह, रिटर्निंग ऑफिसर लीना कोसम एवं अपर कलेक्टर लिली थॉमस ने सेक्टर-7 स्थित कल्याण कॉलेज में निर्वाचन कार्यों की तैयारियों का बारीकी से निरीक्षण किया।

अधिकारियों ने कमीशनिंग रूम, स्ट्रॉन्ग रूम, मतगणना कक्ष तथा निर्वाचन सामग्री वितरण एवं वापसी स्थल का जायजा लिया। प्रत्येक कक्ष में स्थान की उपलब्धता, सुरक्षा व्यवस्था और निर्वाचन प्रक्रिया को सुचारू रूप से संपन्न कराने की तैयारियों का अवलोकन किया गया।

अधिकारियों ने सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित रखने और आवश्यक तैयारियां समय-सीमा में पूर्ण करने पर जोर दिया, ताकि निर्वाचन के दौरान किसी प्रकार की असुविधा न हो। निरीक्षण के दौरान डिप्टी कलेक्टर अनन्या अग्रवाल, अपर आयुक्त राजेंद्र कुमार दोहरे, उपायुक्त डी.के. कोसरिया, जोन आयुक्त येशा लहरे, तरुणपाल लहरे सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

जनदर्शन में नागरिकों ने प्रस्तुत किए 3 आवेदन, निराकरण के लिए संबंधित विभागों को भेजे जाएंगे



नगर पालिक निगम भिलाई के सभागार कक्ष में प्रत्येक सोमवार को नागरिकों की मूलभूत समस्याओं के निराकरण के उद्देश्य से जनदर्शन का आयोजन किया जाता है। इस जनदर्शन के माध्यम से शहर के नागरिक अपनी मांगों एवं समस्याओं को सीधे निगम प्रशासन के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं।

इसी क्रम में आयोजित जनदर्शन में निगम आयुक्त सुरुचि सिंह एवं उपायुक्त नरेन्द्र कुमार बंजारे की उपस्थिति में नागरिकों द्वारा कुल 3 आवेदन प्रस्तुत किए गए। प्राप्त आवेदनों में नागरिकों ने अपनी समस्याओं एवं आवश्यकताओं से संबंधित विषयों को निगम अधिकारियों के समक्ष रखा। जनदर्शन में प्राप्त सभी आवेदनों का नियमानुसार परीक्षण किया जाएगा। इसके पश्चात संबंधित विभागों को आवश्यक कार्रवाई एवं निराकरण के लिए प्रेषित किया जाएगा। साथ ही संबंधित अधिकारियों द्वारा आवेदनों पर की जाने वाली कार्रवाई की प्रक्रिया सुनिश्चित की जाएगी, ताकि नागरिकों की समस्याओं का समयबद्ध निराकरण हो सके। निगम प्रशासन द्वारा प्रत्येक सोमवार को जनदर्शन के माध्यम से नागरिकों को अपनी समस्याएं रखने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। इसका उद्देश्य नागरिकों और निगम प्रशासन के बीच सीधा संवाद स्थापित कर मूलभूत समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी समाधान सुनिश्चित करना है।

दिग्विजय क्लब के वित्तीय लेन-देन पर रोक 2.26 करोड़ की राशि पर प्रशासन का पहरा

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव

श्री दिग्विजय क्लब के संबंध में प्राप्त शिकायत की जांच के बाद जिला प्रशासन ने क्लब के वित्तीय लेन-देन पर तत्काल रोक लगा दी है। तहसीलदार राजनांदगांव को प्रशासक नियुक्त किया गया है। वहीं खेल गतिविधियां जारी रहेंगी, जिनके संचालन की जिम्मेदारी सहायक संचालक, खेल एवं युवा कल्याण को दी गई है।

जांच में सामने आया कि क्लब की नजूल पट्टे की भूमि 'श्री दिग्विजय क्लब, राजनांदगांव, अध्यक्ष कलेक्टर राजनांदगांव' के नाम पर आवंटित है। वर्तमान पदाधिकारियों के निर्वाचन को पदेन अध्यक्ष कलेक्टर की मान्यता मिलने संबंधी कोई अभिलेख प्रस्तुत नहीं हुआ। बैंक खातों के संचालन, आय और किराए के उपयोग, निर्माण कार्य तथा संपत्तियों से संबंधित निर्णयों के लिए भी पदेन अध्यक्ष की अनुमति के दस्तावेज नहीं मिले।

क्लब के इंडियन बैंक के बचत खाते में लगभग 70.74 लाख रुपये और सावधि जमा खातों में लगभग 155.35 लाख रुपये जमा हैं। कुल जमा राशि करीब 2.26 करोड़ रुपये है। राशि और संपत्तियों के दुरुपयोग की आशंका को देखते हुए यह अंतरिम व्यवस्था की गई है।

आदेश के अनुसार, कलेक्टर की पूर्व लिखित अनुमति के बिना खातों से कोई लेन-देन नहीं होगा। प्रशासक को क्लब के कार्यालय, अभिलेखों, बैंक दस्तावेजों और समस्त चल-अचल संपत्तियों का तत्काल आधिपत्य लेने के निर्देश दिए गए हैं। वर्तमान पदाधिकारियों को तीन दिन के भीतर पासबुक, चेकबुक, एफडी रसीदें, लेखा पुस्तकें, किरायानामे, चाबियां और संपत्ति संबंधी दस्तावेज सौंपने होंगे। क्लब परिसर में निर्माण, परिवर्तन और विस्तार कार्यों पर भी रोक लगाई गई है। क्लब की दुकानों और संपत्तियों का किराया अब प्रशासक प्राप्त करेंगे।

15 साल पहले 5 गट्ठे से शुरू हुई परंपरा, आज रोज 500 गट्ठर घास खा रही हैं गौ माता



राजनांदगांव। श्री मिथिला धाम गणेश हनुमान मंदिर मौनी बाबा आश्रम द्वारा आज से 15 वर्ष पूर्व गोपाष्टमी के दिन गौ माता को हरी घास खिलाने की शुरूआत हुई थी। प्रारंभ में मंदिर परिसर में केवल पांच गट्ठा घास खिलाने की परंपरा शुरू हुई थी।

आज 15 वर्ष पश्चात राजनांदगांव के गौ भक्तों के सहयोग से प्रतिदिन 500 गट्ठर घास खिलाया जाता है। जन सहयोग की यह जीती-जागती मिसाल है। किसी को भी ज्यादा पैसा खर्च नहीं करना पड़ता। प्रत्येक गौ सेवक 10, 20, 50 और 100 रुपये अपनी सामर्थ्य के हिसाब से घास खिलाते हैं। गणेश मंदिर के अलावा गुरुद्वारा के पास एवं अवाना होटल के पास भी गौ भक्तों द्वारा घास खिलाया जाता है।

हरियाणा से भटककर राजनांदगांव पहुंचा मानसिक रूप से अस्वस्थ युवक, पुलिस ने परिजनों को सौंपा

नई दृष्टिबिंदु / राजनांदगांव



हरियाणा से भटककर राजनांदगांव पहुंचे मानसिक रूप से अस्वस्थ व्यक्ति को सिटी कोतवाली पुलिस ने सुरक्षित उसके परिजनों को सौंप दिया। तीन दिनों से पारीनाला दरगाह के पास भटक रहे व्यक्ति को सोहेल खान ने देखा। पूछने पर उसने अपना नाम त्रिलोक बनवाला पिता सतवीर सिंह जाट, उम्र 38 वर्ष, निवासी ग्राम सिंगवाल, थाना नरवाना, जिला जींद (हरियाणा) बताया।

सोहेल ने मानवता के नाते उसे भोजन कराया और इंटरनेट मैप से ग्राम सिंगवाल के कपड़ा व्यवसायी से संपर्क कर व्हाट्सएप पर फोटो भेजा। फोटो देखकर छोटे भाई विरेन्द्र सिंह जाट ने उसकी पहचान अपने बड़े भाई के रूप में की। सूचना पर विरेन्द्र सिंह हरियाणा से राजनांदगांव पहुंचा। उसने बताया कि त्रिलोक डेढ़ साल से घर से बिना बताए निकला था, पहले भी वह घर छोड़कर गया था और छह माह बाद लौटा था। पुलिस ने औपचारिक कार्यवाही के बाद त्रिलोक को उसके भाई को सौंप दिया। उल्लेखनीय है कि सोहेल खान अब तक 11-12 भटके हुए व्यक्तियों की मदद कर उन्हें परिजनों से मिला चुका है, जिसकी पुलिस ने भी सराहना की।

कमीशन के लालच में खाता बेचा, साइबर ठगों के काम आए, 6 म्यूल खाताधारक गिरफ्तार



नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

साइबर ठगी की रकम के लेन-देन के लिए बैंक खाते, एटीएम और सिम कार्ड उपलब्ध कराने वाले 6 म्यूल खाताधारकों को दुर्ग पुलिस ने गिरफ्तार किया है। सुपेला, पदमनाभपुर, मोहन नगर और एसीसीयू की संयुक्त टीम ने यह कार्रवाई की।

जांच में पता चला कि आरोपियों ने 5 हजार से 15 हजार रुपए के कमीशन के लालच में अपनी पासबुक, एटीएम कार्ड, चेकबुक और सिम कार्ड एजेंटों के जरिए साइबर अपराधियों को दे दिए थे। इन खातों में ठगी की लाखों रुपए की राशि का लेन-देन हुआ। गिरफ्तार आरोपी में सुपेला से आशीष कुमार साहू (38), नीतेश मसीह (36), धरम राज तिवारी (51), पदमनाभपुर से अमित मिश्रा (32), गिरजा सिन्हा (23) और मोहन नगर से रविन्द्र कुमार दिवान (42) को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने पासबुक, एटीएम, चेकबुक, सिम और मोबाइल जब्त किए हैं। दुर्ग पुलिस ने अपील की है कि कमीशन के लालच में किसी को अपना खाता, एटीएम, पासबुक या सिम न दें। ठगी होने पर 1930 पर शिकायत करें।

सूने मकान में 1.60 लाख की चोरी, फरार आरोपी अजय धनकर गिरफ्तार



उतई-दुर्ग। ग्राम डुण्डेरा के कचरू नगर में सूने मकान का ताला तोड़कर लाखों की चोरी करने वाला फरार आरोपी अजय धनकर (19) को उतई पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। उसे न्यायिक अभिरक्षा में भेजा गया है।

7-8 अक्टूबर की रात आरोपियों ने आनंदु सुकुमारन के बंद मकान के पीछे के किचन का दरवाजा तोड़कर एलईडी टीवी, लैपटॉप, फ्रिज, वाशिंग मशीन, पंखे, सोने के आभूषण और दस्तावेज सहित करीब 1.60 लाख रुपए की संपत्ति चुरा ली थी। मकान मालिक विदेश में रहता है, इसलिए मकान लंबे समय से बंद था।

पुलिस ने पहले ही 4 आरोपियों और 2 अपचारी बालकों को गिरफ्तार कर लिया था। पूछताछ में पता चला कि गैंग बंद मकानों की रेकी करता था, रात में पीछे से घुसकर चोरी करता और सामान अलग-अलग लोगों को बेचकर पैसा बांट लेता था। पूर्व कार्रवाई में चोरी का सामान और बिक्री के 58,500 रुपए बरामद किए गए थे।

छत्तीसगढ़िया समाज के अपमान के मामले में मधुबाला गिरी की गिरफ्तारी की मांग, क्रान्ति सेना ने सौंपा ज्ञापन

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर



छत्तीसगढ़ एवं छत्तीसगढ़िया समाज के खिलाफ कथित अपमानजनक एवं धमकी भरे शब्दों का प्रयोग करने के मामले में छत्तीसगढ़िया क्रान्ति सेना ने विधानसभा थाना पहुंचकर आरोपी मधुबाला गिरी की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग करते हुए ज्ञापन सौंपा।

ज्ञापन में सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि वीडियो में मधुबाला गिरी द्वारा छत्तीसगढ़िया समाज के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करने के साथ ही धमकी भरी भाषा का इस्तेमाल किया गया है। इससे समाज की भावनाएं आहत हुई हैं और सामाजिक सौहार्द प्रभावित होने की आशंका है।

क्रान्ति सेना के अनुसार, संबंधित महिला के रायपुर से फरार होने की बात सामने आ रही है। संगठन ने पुलिस से मांग की है कि उपलब्ध वीडियो एवं अन्य डिजिटल साक्ष्यों की निष्पक्ष जांच कर तत्काल आरोपी की तलाश एवं गिरफ्तारी सुनिश्चित की जाए तथा कठोर वैधानिक कार्रवाई की जाए। संगठन ने स्पष्ट किया कि छत्तीसगढ़ की अस्मिता, स्वाभिमान और छत्तीसगढ़िया समाज के सम्मान के साथ किसी भी प्रकार का अपमानजनक व्यवहार स्वीकार नहीं किया जाएगा।

नर्सिंग कर्मचारियों ने खोला मोर्चा! 10 मेडिकल कॉलेजों में प्रदर्शन

रायपुर। छत्तीसगढ़ में सरकारी मेडिकल कॉलेजों की स्वास्थ्य सेवाओं पर असर पड़ने की आशंका के बीच नर्सिंग कर्मचारियों ने अपनी लंबित मांगों को लेकर आंदोलन का रास्ता अपना लिया है। नर्सिंग ऑफिसर्स एसोसिएशन छत्तीसगढ़ के आह्वान पर प्रदेश के 10 मेडिकल कॉलेजों में 18 नवंबर से अनिश्चितकालीन विरोध प्रदर्शन का कार्यक्रम निर्धारित किया गया है। कर्मचारी ग्रेड पे का आदेश जारी करने, वर्ष 2018 की कमेटी की अनुशंसाओं को लागू करने और संविदा कर्मचारियों के नियमितीकरण सहित नौ सूत्रीय मांगों पर निर्णय चाहते हैं। संगठन ने चेतावनी दी है कि जल्द समाधान नहीं निकला तो आंदोलन का दायरा और बढ़ाया जाएगा।

छत्तीसगढ़ के पांच जिलों में जिला समन्वयक के पदों पर होगी भर्ती, 30 नवंबर तक कर सकेंगे आवेदन

दुर्ग। सीएसएसी ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड द्वारा छत्तीसगढ़ के पांच जिलों में जिला समन्वयक के रिक्त पदों पर भर्ती के लिए योग्य एवं इच्छुक अभ्यर्थियों से आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। बेमेतरा, दुर्ग, कांकेर, कोरबा एवं राजनांदगांव जिले में जिला समन्वयक के एक-एक पद पर नियुक्ति की जाएगी। इस प्रकार कुल 5 पदों पर भर्ती की जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी 30 नवंबर 2026 तक आवेदन कर सकते हैं। भर्ती से संबंधित शैक्षणिक योग्यता, पात्रता, चयन प्रक्रिया, आवेदन प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारी के लिए अभ्यर्थी सीएसएसी की आधिकारिक वेबसाइट https://csc.gov.in के करियर सेक्शन का अवलोकन कर सकते हैं।







"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100